भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 340 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज रविवार 26 दिसम्बर 2021 विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

रिश्ते में भाई-बहन का प्यार घरवालों को नहीं था स्वीकार, राजस्थान के कोटा में फांसी लगाकर दी जान

कोटा। राजस्थान के कोटा में एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है। यहां पर एक जोड़े ने अपनी जान दे दी। बताया जाता है कि यह युगल रिश्ते में भाई-बहन थे। दोनों के बीच अफेयर था, जिसे उनके घरवालों ने स्वीकार करने से मना कर दिया था। अनुमान है कि इसी बात से परेशान होकर दोनों ने जान दे दी। राजस्थान में इस जोड़े के फांसी लगाकर जान देने से हड़कंप मच गया। दावा किया जाता है कि उनके परिवारों को उनका रिश्ता स्वीकार नहीं था, क्योंकि वे आपस में रिश्तेदार हैं। पुलिस ने शनिवार को बताया कि रिंकू मेघवाल (21) और लक्ष्मी मेघवाल (16) बारां जिले के बिलोदा गांव में स्थित अपने घरों से एक किलोमीटर दूर पेड़ से लटके मिले। पुलिस के मुताबिक, वे आपस में रिश्ते के भाई-बहन हैं। उन्होंने कहा कि दोनों का कथित रूप से प्रेम प्रसंग था। लेकिन उनके परिवार ने उनके इस रिश्ते को स्वीकार नहीं किया।

मोदी का ऐलान-

5-18 साल के बच्चों के लिए 3 जनवरी से वैक्सीनेशन

नई दिल्ली (एजेंसी)। दो बड़े ऐलान किए। इसके तहत 15 साल से 18 साल के बच्चों को 3 जनवरी (सोमवार) 2022 से कोरोना का टीका लगाया जाएगा। पीएम मोदी ने इसके साथ ही हेल्थ वर्कर्स और फ्रंट लाइन वर्कर्स के लिए बूस्टर डोज की घोषणा कर दी है। पीएम मोदी ने कहा कि 60 साल से अधिक उम्र के उन लोगों को भी बूस्टर डोज दिया जाएगा जो दूसरी गंभीर बीमारियों से पीड़ित हैं।

15-18 साल तक के बच्चों को टीका

पीएम मोदी ने बच्चों के टीकाकरण का ऐलान करते हुए कहा कि यह देश की लड़ाई को तो मजबूत करेगा ही स्कूल कॉलेज में जा रहे हमारे बच्चों और उनके माता-पिता की चिंता दूर करेगा। पीएम मोदी ने कहा, 15 साल से 18 साल की आयु के बीच के जो बच्चे हैं, अब उनके लिए देश में वैक्सीनेशन प्रारंभ होगा। 2022 में, 3 जनवरी को, सोमवार के दिन से

बुजुर्गों-हेल्थ वर्कर्स के लिए 10 जनवरी से बूस्टर डोज

इसकी शुरूआत की जाएगी।

हेल्थकेयर और फ्रंटलाइन वर्कर्स को 10 जनवरी से बूस्टर डोज

हेल्थकेयर और फ्रंटलाइन वर्कर्स के लिए बूस्टर डोज का ऐलान करते हुए पीएम मोदी ने कहा, हम सबका अनुभव है कि जो कॉरोना वॉरियर्स हैं, हेल्थकेयर और फ्रंटलाइन वर्कर्स हैं, इस लड़ाई में देश को सुरक्षित रखने में उनका बहुत बड़ा योगदान है। वो आज भी कोरोना के मरीजों की सेवा में अपना बहुत समय बिताते हैं। इसलिए एहतियात के तौर पर सरकार ने निर्णय लिया है कि हेल्थकेयर और फ्रंटलाइन वर्कर्स को वैक्सीन की (बूस्टर डोज) भी प्रारंभ की जाएगी। इसकी शुरूआत 2022 में, 10 जनवरी, सोमवार के दिन से की जाएगी।

पीएम मोदी ने कहा दूसरी बीमारियों से ग्रसित बुजुर्गों के लिए भी बूस्टर डोज की घोषणा की है। पीएम मोदी ने कहा, 60 वर्ष से ऊपर की आयु के कॉ-मॉरबिडिटी वाले नागरिकों को, उनके डॉक्टर की सलाह पर वैक्सीन की ढर्शूं४३ङ्कल्ल उङ्करी का विकल्प उनके लिए भी उपलब्ध होगा। यह भी 10 जनवरी से उपलब्ध होगा।

पैनिक ना करें सावधानी बरतें

पीएम मोदी ने ओमिक्रॉन से घबराने की बजाय सावधानी बरतने की अपील की। उन्होंने कहा, भारत में भी कई लोगों के ओमीक्रॉन से संक्रमित होने का पता चला है। मैं आप सभी से आग्रह करूंगा कि पैनिक नहीं करें सावधान और सतर्क रहें। मास्क और हाथों को थोड़ी-थोड़ी देर पर धुलना, इन बातों को याद रखें।

तीसरी लहर से निपटने की तैयारी

पीएम ने कहा कि आज आज जब वायरस म्यूटेशन कर रहा है तो हमारा विश्वास भी बढ़ रहा है। आज देश के बास 18 लाख आइसोलेशन बेड है। 5 लाख ऑक्सीजन बेड हैं। 5 लाख आईसीयू बेड हैं। आईसीयू और नॉन आईसीयू बेड विशेष तौर पर बच्चों के लिए हैं। आज देश में 3 हजार से ज्यादा ऑक्सीजन प्लांट काम कर रहे हैं। 4 लाख ऑक्सीजन सिलेंडर देश को दिए गए हैं। राज्यों को जरूरी दवाओं की बफर स्टॉक तैयार करने में मदद की जा रही है।

भारत बायोटेक के को डीसीजीआई ने दी मंजूरी

नई दिल्ली। देश में ओमिक्रॉन की वजह से कोरोना की तीसरी लहर की आशंका के बीच बड़ी खुशखबरी आई है। देश में अब 18 से 12 साल तक के बच्चों को भी कोरोना का टीका लगेगा। ड्रग्स कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडियाने भारत बायोटेक और आईसीएमआर की ओर से विकसित कोवैक्सीन को मंजूरी दे दी है। एक न्यूज एजेंसी ने आधिकारिक सूत्रों के हवाले से यह जानकारी दी है। देश को पहली स्वदेशी कोरोना रोधी वैक्सीन देने वाली कंपनी भारत बायोटेक ने 2 से 18 साल तक के बच्चों पर टीके का ट्रायल किया है।

जम्मू-कश्मीर में आतंक पर बड़ी चोट

सुरक्षाबलों ने 36 घंटे में ढेर किए पांच आतंकवादी

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर में पिछले 36 घंटे में सुरक्षाबलों ने पांच ातंकवादियों को मौत की नींद सुला दिया है। शनिवार शाम को अवंतीपोरा के हरदुमीर त्राल इलाके में हुए एनकाउंटर में सुरक्षा बलों ने दो आतंकवादियों को ढेर कर दिया है। इससे पहले सुबह में शोपियां जिले में सुरक्षाबलों ने एनकाउंटर में लश्कर-ए-तैयबा के दो आतंकवादियों को मार गिराया था। वहीं, शुक्रवार को अनंतनाग में हुए एक एनकाउंटर में सुरक्षाबलों ने एक आतंकी को ढेर कर दिया था। इसके अलावा सुरक्षबलों ने चार दहशतगर्दों को गिरफ्तार भी किया था। अवंतीपोरा में एनकाउंटर से कुछ घंटे पहले सुरक्षाबलों ने शोपियां जिले दो आतंकवादियों को मार गिराया था। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि आतंकवादियों की मौजूदगी की खुफिया सूचना मिलने पर सुरक्षा बलों ने शोपियां के चौगाम इलाके में घेराबंदी कर तलाश अभियान शुरू किया था। इस दौरान इलाके में छिपे आतंकवादियों ने सुरक्षा बलों पर गोलियां चलाईं, जिसके बाद सुरक्षा बलों ने भी जवाबी कार्रवाई की और अभियान मुठभेड़ में तब्दील हो गया। अधिकारी ने बताया कि मुठभेड़ में दो आतंकवादी मारे गए। आतंकवादियों की शिनाख्त की जा रही है, और उनके संगठन के बारे में पता लगाया जा रहा है। वहीं, शुक्रवार को अनंतनाग में हुए मुठभेड़ में हिज्बुल मुजाहिद्दीन के एक आतंकवादी को मार गिराया था।

शुक्रवार को अवंतीपोरा में सर्च ऑपरेशन केदौरान सुरक्षाबलों ने चार आतंकवादियों को पकड़ा था और उनके पास से हथियारों का जखीरा बरामद किया था। आतंकियों के पास से एक एके 56 राइफल, एक एके 56 मैगजीन, 28 राउंड गोला बारूद और एक हथगोला बरामद किया गया।

खबर संक्षेप

रेलमंत्री के आने की हुई सूचना से हड़कंप, रूट बदलकर निकल गए मंत्री जी

जंघई। जंघई जंक्शन से स्पेशल ट्रेन द्वारा रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव के जाने की सूचना पर अधिकारियों व कर्मचारियों में हड़कंप मच गया। आनन-फानन में जंघई जंक्शन पर साफ सफाई के साथ-साथ जरौना जंघई मार्ग पर स्थित रेलवे फाटक व मछलीशहर जंघई रेल फाटक पर दोनों तरफ पुलिस जवान मुस्तैदी से खड़े होकर सक्रिय ड्यूटी में लग गए। कुछ देर के बाद जानकारी हुई कि रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव बदले हुए रूट प्रयागराज वाया ज्ञानपुर के रास्ते उनका यान निकल गया। जिसकी जानकारी होते ही अधिकारियों कर्मचारियों ने राहत की सांस लिया।

पहाड़पुर गांव में किशोरी की गला रेतकर हत्या

घर में कोहराम,रात 12 बजे तक घर में टीवी देख रही थी किशोरी, घर से दूर बाग में मिला शव, सुबह ग्रामीणों ने दी पुलिस को जानकारी

अखंड भारत संदेश

सैदाबाद। हंडिया थाना क्षेत्र के पहाड़पुर गांव में घर से कुछ ही दूर स्थित बगीचे में बीए की छात्रा का खून से लथपथ शव मिलने से सनसनी फैल गई। परिजनों का कहना है कि रात युवती रात12 बजे तक घर में ही टीवी देख रही थी। इसके बाद कैसे बाग पहुंची उन्हें इसकी जानकारी नहीं है। घटना के बाद गांव में हड़कंप मचा रहा। ग्रामीणों ने पुलिस को शव कब्जे में लेने से रोक दिया। काफी जद्दोजहद के बाद पुलिस शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज सकी।हंडिया के पहाड़पुर गांव में हुई सनसनीखेज वारदात में 19 वर्षीय नम्रता यादव की गला रेतकर हत्या कर दी गई। उसका खून से लथपथ शव घर से 500 मीटर दूर स्थित बाग में मिला। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि धारदार हथियार से उसे मौत के घाट उतारा गया। शव मिलने की सूचना पर सनसनी फैल गई। पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेने का प्रयास किया तो आक्रोशित ग्रामीणों ने विरोध कर दिया।बाद में किसी तरह बहुत समझाने पर लोग शांत हुए। तब जाकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। पुलिस के मुताबिक पूछताछ में

घटना के बाद छानबीन करती पुलिस तथा इन्सेट में बाग में मृत पड़ी युवती

परिजनों ने बताया है कि रात 12 बजे तक नम्रता घर में ही टीवी देख रही थी। इसके बाद सभी लोग सोने चले गए। सुबह नींद खुली तो वह घर से गायब मिली। खोजबीन चल ही रही थी कि तभी बाग में शव मिलने की सूचना आई। मौके पर पहुंच कर देखा गया तो लाश उनकी बेटी की थी। सैदाबाद में पहाड़पुर गांव के रहने वाले राणाप्रताप गुजरात में रहकर प्राइवेट नौकरी करते हैं। उनके सात बच्चों में चार बेटियां व दो बेटे हैं। इनमें से नम्रता सबसे बड़ी थी। वह घर पर ही रहती थी। पुलिस के मुताबिक, घरवालों ने बताया कि रात 12 बजे तक वह घर में ही टीवी देख रही थी। सुबह परिवार के लोग नींद से जगे, तो वह कहीं दिखाई नहीं दी। आसपास भी पूछा गया लेकिन उसका कुछ पता नहीं चला।खोजबीन चल ही रही थी कि घर के पास ही स्थित बाग में लाश मिलने की खबर मिली। मौके पर पहुंचकर देखा गया तो पता चला कि लाश नम्रता की है। पुलिस के मुताबिक, युवती घर से निकलकर बाग तक कैसे पहुंची, इस बाबत घरवाले कुछ बता नहीं पा रहे हैं। उनका कहना है कि नम्रता टीवी देख रही थी जबकि घर के अन्य सभी लोग सोने चले गए थे। वह घर से कब और कैसे निकली, इस बाबत उन्हें कोई जानकारी नहीं है।

धारदार हथियार से किशोरी पर किया ताबड़तोड़ वार

प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, शव की हालत देखने से लग रहा था कि हत्यारे के सिर पर खून सवार था। युवती के गले पर गहरा जख्म था, जिससे काफी खून भी बहा था। आशंका है कि चापड़ जैसे किसी धारदार हथियार से गले पर ताबड़तोड़ वार कर उसे मौत के घाट उतारा गया। मृतका ने जींस पहन रखी थी जिसकी जेब से 35 रुपये, हेयर बैंड, आर्टिफिशियल अंगूठी व लॉकेट बरामद हुआ। पुलिस ने सभी सामान कब्जे में ले लिए हैं। प्रारंभिक जांच पड़ताल में किसी से रंजिश की बात सामने नहीं आई है। घरवालों ने यह भी बताया है कि मृतका के पास मोबाइल नहीं था। सभी बिंदुओं को ध्यान में रखकर जांच पड़ताल की जा रही है।

अभिषेक अग्रवाल, एसपी गंगापार।

जसरा क्षेत्र में महिलाओं के साथ हो रहे अत्याचार को लेकर आक्रोश

जसरा में महिलाओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ स्लोगन लिखकर विरोध जतातीं महिलाएं युवतियां।

अखंड भारत संदेश

जसरा। जसरा के रेही, जसरा ,ओढ़गी गांव में देश में दलितों, महिलाओं के साथ अत्याचार, भेदभाव,शोषण को रोकने को लेकर एक सभा का आयोजन किया गया। शनिवार को आयोजित कार्यक्रम में लोगों ने अपने हाथों में श्लोगन लिखी तख्तियां पकड़ रखी थी जिसमें मनुवाद मुदार्बाद, पितृसत्ता मुदार्बाद, दलितों पर अत्याचार बंद करो, महिलाओं पर अत्याचार बंद करो, योगी सरकार अपराधियों को बचाना बंद करो, योगी सरकार बलात्कारियों को बचाना बंद करो, डीजल - पेट्रोल, रसोई गैस के दाम आधे करो, सरकारी संपति का निजीकरण बंद करो, योगी-मोदी सरकार देश बेचना बंद करो, दहेज प्रथा पर रोक लगाओ, दोयम दर्जा मुदार्बाद, गोहरी हत्याकांड की न्यायिक जांच कराओ, गोहरी हत्याकांड के अपराधियों को सजा दो, शिक्षा में भेदभाव बंद करो, शिक्षा का व्यवसायी करण बंद करो, सस्ती शिक्षा अच्छी शिक्षा लागू करो, शिक्षा का निजीकरण करना बंद करो आदि नारे लिखे। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहां कीदलितों - महिलाओं के साथ भेदभाव व दोयम दर्जे को परम्परा मनुवाद से प्रारम्भ होकर अंग्रेज हुक्मरानों ने जारी रखा 1947 के आजादी के बाद भारत के शासकों ने भी बखूबी जारी रखा भाजपा आरएसएस की सरकार ने सारी हदे पार करते हुए पीड़िताओं को ही जेल में डाला अपराधियों के साथ मजबूती से खड़ी रही इसका जीता जागता उदाहरण गोहरी हत्याकांड,हाथरस कांड,उन्नाव कांड आदि हैं। आगे कहा कि देश में विभिन्न भाषा - धर्म, अलग - अलग सांस्कृतिक वाले लोग अपनी एकता के साथ जीवन यापन के साथ - साथ खेती व रोजगार व विदेशी लूट के खिलाफ एक साथ आवाज उठाते थे। लेकिन आरएसएस-भाजपा की सरकार ने भारतीय एकता को भंग कर दंगा के सहारे सत्ता में आयी,विदेशी लूट को बढ़ावा दिया सरकारी संपत्तियों को बेचा। अन्य वक्ताओं ने कहा कि उच्च जाति के अहंकार को बढ़ावा दिया। किसानो मजदूरो की आवाज बुलंद करने वाले नेताओं को माफिया बताया माफियाओं को संरक्षण देकर देश की संपदा उनके हवाले कर रहे है। इस मौके पर आकृति सागर, भीमलाल, विनोद, संजय, अभिषे , मालती देवी, श्यामकली, गीता देवी , रामू निषाद, महादेई, नरेश, बृजलाल, आशादेवी आदि उपस्थित रहे।

कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार

जारी। पुलिस उप महानिरीक्षक/ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा मादक पदार्थ के तस्करी पर रोक लगाने हेतु चलाए जा रहे अभियान के क्रम में उप निरीक्षक/चौकी प्रभारी जारी पंकज कुमार त्रिपाठी व उनकी पुलिस टीम द्वारा 20 लीटर अवैध शराब के साथ सुरेश कुमार भारतीय पुत्र प्रभु भारतीय आबकारी अधिनियम के तहत किया गिरफ्तार किया है।

जन आशीर्वाद यात्रा का किया स्वागत

प्रतापपुर। प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र के वरिष्ठ भाजपा नेता पंडित विजय शर्मा के नेतृत्व में जंघई से बाइक एवं चार पहिया वाहनों से अपने समर्थकों संग जूलूस लेकर जन आशीवांद यात्रा में शामिल हुए।जिसमें मंडल अध्यक्ष संदीप तोगड़िया, भाजयुमो जिला कार्यसमिति सदस्य राजा मौर्या, मंडल अध्यक्ष युवा मोर्चा शुभम शुक्ल, उपाध्यक्ष कुशलेश दुबे, राजू सिंह, महावीर मिश्रा, परमिल दुबे, रजत सिंह सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

शुआट्स के यीशु दरबार चर्च में मनाया गया मानव मुक्ति दिवस

अखंड भारत संदेश

नैनी। यीशु दरबार चर्च नैनी में ह्यबड़ा दिनह्ल मानव मुक्ति दिवस के रूप में मनाया गया। कोरोना महामारी के करण कार्यक्रम का आयोजन सादगीपूर्ण तरीके से कोविड-19 गाईडलाईन का पालन करते हुए किया गया। इस अवसर पर परमेश्वर की प्रार्थना, आराधना तथा मसीही गीत की प्रस्तुति हुई। यीशु दरबार चर्च की उपाध्यक्षा डॉ. सुधा लाल ने सभी को क्रिसमस की बधाई दी। शुआट्स कुलपति एवं यीशु दरबार चर्च के बिशप मोस्ट रेव्ह. प्रो0 राजेन्द्र बी. लाल ने सभी को मानव मुक्ति दिवस की शुभकामनायें दीं। उन्होंने कहा कि यीशु मसीह का अर्थ है छुटकारा देने वाला, अभिषेक छुटकारा देने वाला है। प्रभु यीशु मसीह आदि से अनंत काल तक एक जैसा है, क्योंकि वह स्वयं ही जीविते परमेश्वर है। वह पवित्र आत्मा के द्वारा माता मरियम के गर्भ से पैदा होकर मनुष्य के समान हो गया, यही खुशखबरी है। परमेश्वर मनुष्यों से बहुत प्रेम करता है इसीलिए वह देह धारण करके पृथ्वी पर आया है। उन्होंने बाइबल वचन साझा करते हुए कहा कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करें वह नाश ना हो परंतु अनंत जीवन पाए। परमेश्वर मुक्तिदाता है जो हमें मौत से मुक्ति देने आया है, वह हमसे अथाह प्रेम रखता है और हमारे पापों को अपनी देह पर उठा लेता है। जो कोई उस पर विश्वास करेगा उसे पाप से, श्राप से और

शुआट्स के यीशू दरबार चर्च में कार्यक्रम आयोजित

मृत्यु से अवश्य मुक्ति मिलेगी तथा अनंत जीवन प्राप्त होगा। कोविड-19 खतरे को देखते हुए बिशप डा. आर.बी. लाल ने सभी से दूरी बनाये रखने, मास्क पहनने, स्वयं व दूसरों को इस खतरे से सावधानी बरतने की अपील की। उन्होंने कहा कि प्रभु यीशु मसीह के आशीष से हम सब जल्द ही इस खतरे से बाहर होंगे क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों को सदैव बचाता है। प्रति कुलपति (पीएमडी) प्रो0 सर्वजीत हरबर्ट ने मसीही गीत मेरा प्यारा मसीहा आज लस्कर में बुलाया हैह्ल की प्रस्तुति दी। कुलसचिव प्रो0 रॉबिन एल. प्रसाद ने मसीही भजन ह्यऐ खुदाबन बता तेरे खेमे में कौन बसेगाह्ल गाया। आशीष शर्मा ने यीशु है रखवाना भजन की प्रस्तुति दी। स्नेह आश्रम के बच्चों ने ह्यजॉय टू द वर्ल्डह्ल मसीही गीत पर नृत्य की प्रस्तुति दी। संयुक्त निदेशक एचआरएम इं. अभिलाषा लाल, जॉयसी ने मसीही गीत की प्रस्तुति दी। रिहाना प्रसाद ने मसीही ने ह्ययीशु तेरा जन्म मुबारक होह्ल की प्रस्तुति दी। मर्सी ने भी मसीही गीत की प्रस्तुति दी। कोविड-19 के कारण कार्यक्रम का प्रसारण सोशल मीडया यू-ट्यूब के माध्यम से भी किया गया जिसमें आनलाईन लोगों ने सहभागिता की। इस अवसर पर प्रति कुलपति (प्रशासन) प्रो0 एस.बी. लाल, प्रति कुलपति (शैक्षिक) प्रो0 ए0के0 ए0 लॉरेन्स, कुलसचिव प्रो0 रॉबिन एल.प्रसाद, निदेशक प्रशासन विनोद बी. लाल, निदेशक आईपीसी प्रो0 जोनाथन ए. लाल, निदेशक इस्टैबलिस्मेन्ट एण्ड इस्टेट प्रोफेसर रंजन ए. जॉन, रेव्ह. डेविड फिलिप आदि लोग रहे।

करछना थाने का निरीक्षण करते पुलिस कप्तान

एक्शन में कप्तान करछना थाने का निरीक्षण कर लिया जायजा

निरीक्षण के दौरान कार्यशैली से प्रसन्न हुए पुलिस कप्तान थाना प्रभारी टीकाराम वर्मा की तारीफ

करछना। प्रयागराज एसएसपी सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी शनिवार दोपहर अचानक यमुनापार के थाना करछना का औचक निरीक्षण कर आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों का जायजा लिया निरीक्षण करने के बाद थाना प्रभारी टीकाराम वर्मा को आवश्यक दिशा निर्देश दिए आपको बता दें आगामी 2022 विधानसभा चुनाव को देखते हुए एसएसपी सर्वश्रेष्ठ त्रिपाठी जनपद के हर थाने का औचक निरीक्षण करके मुआयना कर रहे हैं कि आगामी विधानसभा चुनाव किस तरीके से सकुशल संपन्न कराया जाए कहीं तैनात थाना प्रभारी लापरवाही तो नहीं कर रहे हैं जिनकी कार्यशैली पर अगर शंका होती है उन्हें तत्काल हटाकर वहां पर नया थाना प्रभारी तैनात किया जाता है ,इसी क्रम में शनिवार को करछना थाने में तैनात पुलिस टीम के साथ बैठक में जानकारी हासिल किया और आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

नौनिहाल बच्चों ने मनाया क्रिसमस डे

हर्षोल्लास के साथ स्कूलों में मनाया गया क्रिसमस का पर्व

अखंड भारत संदेश

जारी। जारी कस्बे में दिन शनिवार को शैल पब्लिक स्कूल जारी गड़ैया में नौनिहाल बच्चों ने क्रिसमस डे के उपलक्ष में केक काटा गया । प्रभु यशु मसीह के जीवन के बारे बताया । बच्चों को उपहार और टाफ?यां बांटी गई। क्रिसमस डे के उपलक्ष में बच्चे खूब उत्साहित थे ।बच्चों ने अपने अभिभावकों से क्रिसमस डे के उपलक्ष में चॉकलेट ,टॉफी, नमकीन ,पेस्टी ,उपहार भी मंगाए थे । जिसे बच्चे स्कूल में एक दूसरे को टोफी खिलाएं और खूब जम के बच्चों ने आनंद उठाएं। नर्सरी से पांच तक के बच्चों को प्रधानाचार्य ने संबोधित किया एवं बच्चों को उत्साहवर्धन भी किया । क्रिसमस डे कि बधाई दी।

शैल पब्लिक स्कूल के बच्चे धूमधाम से क्रिसमस पर्व मनाते

बच्चों ने क्रिसमस से संबंधित पोस्टर, क्रिसमस से संबंधित संदेश दिया। बच्चों ने अपनी विभिन्न पोस्टर के माध्यम से यह संदेश दिया कि सैंटा क्लोज आता है और खुशियां लाता है। जीवन को सुखमय बनाने में शांति और अहिंसा का अभूतपूर्व योगदान है।इस मौके पर विद्यालय के प्रधानाचार्य अनिल पांडे, सुनील पांडे, बिपिन कुमार मिश्रा आदि मौजूद थे।

प्रकाश क्रिकेट प्रतियोगिता का डीहा में हुआ शुभारंभ

जिला पंचायत सदस्य डॉ विजय यादव ने फीता काटकर किया उद्घाटन

अखंड भारत संदेश

करछना। विकासखंड के अंतर्गत ग्राम पंचायत डीहा में सात दिवसीय क्रिकेट प्रतियोगिता का जिला पंचायत सदस्य डॉक्टर विजय बाबू यादव ने फीता काटकर प्रतियोगिता का उद्घाटन किया इस बीच सात टीमों ने पहले दिन प्रतिभा किया जिसमें उद्घाटन मैच खाई और कबरा टीम के साथ खेला गया जिसमें खाई टीम ने 60 रन बनाकर कबरा टीम को लक्ष्य रखा । जिसका कबरा की टीम ने लक्ष्य का पीछा करते हुए 40 रन बनाकर सिमट गई जिससे उद्घाटन मैच खाई टीम 25 रन से जीत कर उदघाटन मैंच अपने नाम कर लिया इस अवसर पर दूधनाथ यादव प्रधान प्रतिनिधि, प्रधान डीहा प्रेमचंद आदिवासी, जितेंद्र शुक्ला एडवोकेट,लालजी यादव जगदीश प्रसाद ,मणि बहादुर यादव पंकज कुमार यादव ,ज्ञान निषाद नीलकमल ,अनुपम शुक्ला ,मंगलेश यादव ,अजीत कुमार सनोज कुमार ,विजय तिवारी, पप्पू मिश्रा

दयाशंकर तिवारी मोहम्मद कलाम लवकुश यादव अनिल कुमार ,जीतू सिंह ,आकाश सिंह ,विनोद कुमार विकास यादव अजय पाल ,लोकेश ,आशीष सचिन तिवारी शरद ,कपिल मोहित रामू , सुनील विकास सिंह उत्तम ,सूरज ,गोलू , सुभाष, चंद्रकेस ,मोनू रामू रवि ,विजय राज, एवं बड़ी संख्या में खेल प्रेमी मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

जसरा में महा मना मदन मोहन मालवीय की 160 वी जयंती मनाई गई

जसरा। ब्राह्मण परिषद के सभागार में महामना मदन मोहन मालवीय की 160 वीं जयंती मनाई गई। जिसमें वक्ताओं ने उनके कार्यों का उल्लेख किया। शनिवार को जसरा के कोटवारन का पूरा स्थित ब्राह्मण परिषद के प्रांगण में लालमणि पांडेय की अध्यक्षता में महामना मदन मोहन मालवीय की जयंती के अवसर पर उपस्थित लोगों ने उनके चित्र पर पुष्प चढ़ाकर दीप प्रज्वलित किया। कार्यक्रम के आयोजक व संचालक अधिवक्ता गया प्रसाद त्रिपाठी ने कहा कि पंडित मदन मोहन मालवीय भारतीय विद्वान, शिक्षा सुधारक व राजनीतिज्ञ थे तथा स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़ चढ़ कर भाग लिया। अन्य वक्ताओं ने भी उनके व्यक्तित्व पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर अधिवक्ता अयोध्या प्रसाद पाठक , अरुण कुमार शुक्ल उर्फ शीलू,अनिल मिश्रा, जगदंबा प्रसाद पाठक, गोपाल जी मिश्र, पंडित वीरेंद्र शास्त्री , अनिरुद्ध पाठक , रविशंकर शुक्ल ,चंद्रशेखर पांडेय, कौशलेश पाठक ,शिवराम द्विवेदी, सुनील दुबे आदि लोग उपस्थित रहे।

भाजपाइयों ने मनाया भारत रत्न पंडित अटलबिहारी वाजपेयी का जन्मदिन

प्रतापपुर। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटलबिहारी बाजपेयी के जन्मदिन (सुशासन दिवस) पर मंडल भाजपा प्रतापपुर के भाजपा कार्यकताओं ने चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पण कर के उनको याद किया व उनके दिखाये गये मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।जिसमें मंडल अध्यक्ष प्रतापपुर पं. आशुतोष त्रिपाठी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष गुड्डू मिश्रा, मंडल महामन्त्री पंडित श्यामधर शर्मा, मीडिया प्रभारी आचार्य मयंक मिश्र, प्रबुद्ध प्रकोष्ठ संयोजक ज्ञानेंद्र पांडेय, शिवशंकर मिश्र, अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष हारून अंसारी उपस्थित रहे।

प्रथम आगमन पर सपा राष्ट्रीय सचिव का हुआ भव्य स्वागत

कोरांव। समाजवादी पार्टी(छास) के नवनियुक्त राष्ट्रीय सचिव प्रमोद मिश्र पयासी का गाड़ियों के लंबे काफिले के साथ प्रथम शहर आगमन पर समाजवादी पार्टी जिला कार्यालय में सपा नेताओं और कार्यकताओं द्वारा फूल माला पहनाकर जोरदार ढंग से स्वागत एवम अभिनंदन किया गया इस दौरान पूरे यमुनापार में जगह जगह कार्यकताओं द्वारा माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। इस मौके पर नवनियुक्त राष्ट्रीय सचिव ने कहा की समाजवादी पार्टी के द्वारा दिए गए मान सम्मान से अभिभूत हूं और जिस तरह से कोरांव क्षेत्र के जो की पिछड़े इलाको में गिनती होती है इसके एक छोटे से गांव से निकालकर एक साधारण कार्यकर्ता को राष्ट्रीय स्तर की बड़ी जिम्मेदारी देने का कार्य किया है इसके लिए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव और छात्र सभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष नेहा यादव का सदैव आभारी रहूंगा। मौके पर उपस्थित समाजवादी पार्टी के जिले के मुखिया योगेश यादव जिलाध्यक्ष समाजवादी पार्टी ने कहा की पार्टी का एक एक कार्यकर्ता खुद को अखिलेश यादव बनकर कार्य करेगा और पूरी ईमानदारी निष्ठा से पार्टी के नीतियों को जन जन तक पहुंचाने का कार्य करेगा तो निश्चित ही सूबे में सपा सरकार बनना संभव हो सकेगा। स्वागत करने वालो मुख्य रूप से संदीप पटेल जिला महासचिव इफ्तेखार हुसैन महानगर अध्यक्ष इन्द्रनाथ मिश्रा ब्लाक प्रमुख राम कृपाल कोल पूर्व विधायक सोमदत्त सिंह पटेल विधानसभा प्रभारी सुमन कोल जिला पंचायत सदस्य राममूरत यादव(नाटे चौधरी)मेहताब खान नगर पंचायत अध्यक्ष सपा विजय भारतीय प्रदेश सचिव लोहिया वाहिनी ओम प्रकाश कुशवाहा राजेश पांडे दिनेश पटेल रामदेव निडर शहादत अली, आदि लोग उपस्थित रहे।

सपा के राष्ट्रीय सचिव का रामपुर में हुआ जोर दार स्वागत

करछना। विधान सभा के रामपुर चौराहे पर शनिवार को समाजवादी छात्रसभा के राष्ट्रीय सचिव प्रमोद मिश्रा पयासी के प्रयाजराज प्रथम आगमन पर समाजवादी छात्रसभा के विधानसभा करछना के अध्यक्ष विकास सोनी के अध्यक्षता में फैजल सिद्दीकी के ऑफिस में भव्य एवं जोर दार स्वागत किया गया व अखिलेश यादव को 2022 के चुनाव में जीत सुनिश्चित बनाये जाने केलिए कार्यकताओं के साथ बैठक कर बनाईं रणनीति ।इस कार्यक्रम में मोहित पांडे, फैजल सिद्दीकी, करछना ब्लॉक अध्यक्ष कांति पासी युवजन सभा, करछना ब्लॉक अध्यक्ष रितेश सिंह साहिल छात्रसभा, कोषाध्यक्ष कुणाल पांडे, मो. सलमान, रामबाबू यादव, आदित्य सिंह, सिंगर ओम शिवम पांडे व आदि लोग मौजूद रहे।

पीयूष सिंह राजपूत मिस्टर जंघई बने मिला सम्मान

जंघई। डिवाइन कोचिंग एवं जिम के तत्वावधान में तृतीय मिस्टर जंघई प्रतियोगिता का आयोजन जिम के प्रबंधक विकास सिंह द्वारा किया गया।जिसमें विभिन्न प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया अन्य प्रतिभागियों को पीछे छोड़ते हुए पीयूष सिंह राजपूत प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए मिस्टर जंघई बने।मुख्य अतिथि अपनादल नेता एवं पूर्व प्रत्याशी कैप्टन करन सिंह ने प्रतिभागियों को सम्मानित करते हुए आयोजक विकास सिंह को शाबाशी दी और उपस्थित लोगों का मनोबल बढ़ाया कि गाँव में ऐसे आयोजन से युवाओं को भी आगे बढ़ने का मौका मिलेगा और भविष्य में आप लोगो के आशीर्वाद से प्रतापपुर विधानसभा को एक आदर्श विधानसभा में स्थापित करुंगा।प्रतिभागियों में दूसरा स्थान बराबरी का रहा आर्या और वसीम के बीच, एवं तीसरे स्थान पर संदीप यादव रहें।कार्यक्रम का संचालन आकाश सिंह ने किया इस अवसर पर अभिषेक राय, शुभम सिंह, आशीष दुबे, पवन सिंह मीरगंज, नितेश सिंह, कल्लू पांडेय, खुशहाल शुक्ला, सतीश त्रिपाठी, मुन्ना सिंह, कुणाल चतुर्वेदी, सर्वजीत सिंह अन्नू, मलखान सिंह, विनय सिंह चंदेल, रवि गौतम, अनुराग ठाकुर, आदर्श शुक्ल, प्रिंस सिंह, विपिन सिंह, विशाल राजपूत, सलमान हाशमी, अनुज सिंह सिंह आदि रहे।

खबर संक्षेप

अवंतिका कालोनी की समस्याओं के सम्बन्ध में बैठक आज

नैनी। कालोनी के सम्यक विकास एवं जन समस्याओं के निराकरण के सम्बन्ध मे विचार विमर्श हेतु कालोनी वासियों की एक बैठक 26 दिसम्बर दिन रविवार को पुर्वान्ह 11 बजे रामलीला पार्क पीडीए कालोनी नैनी मे आयोजित की गई है। उक्त जानकारी देते हुए गजेन्द्र प्रताप सिंह पत्रकार ने बताया कि अब पीडीए द्वारा नगर निगम मे स्थान्तरित हो जाने से सम्बन्धित विभाग को समस्याओं से अवगत कराने एवं जनप्रतिनिधियों से सम्यक विकास के बारे मे जबावदेही तय करने के सम्बन्ध मे आपसी विमर्श करने हेतु यह बैठक महत्वपूर्ण है। उन्होंने सभी कालोनी वासियों से बैठक मे सक्रिय सहभागिता करने की अपील की है।

क्रियायोग आश्रम में क्रिसमस पर्व का हुआ भव्य आयोजन

तीन दिन में शरीर का पुनर्निर्माण ही, क्रिसमस डे का प्रतीक : स्वामी श्री योगी सत्यम

क्रियायोग ध्यान में बैठे साधक

ईसा मसीह के जीवन को क्रियायोग विधि से बताते स्वामी श्री योगी सत्यम

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान, झूंसी, प्रयागराज में क्रिसमस पर्व का भव्य आयोजन किया गया। 25 दिसंबर जिसे बड़े दिन के नाम से जाना जाता है, आज के दिन पूरी दुनिया में प्रभु ईसा मसीह के सम्मान में समारोह आयोजित किया जाता है। इस पावन अवसर पर क्रियायोग आश्रम में विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ, जिसमें गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम जी ने क्रियायोग अभ्यास के उपरांत वहाँ उपस्थित सभी साधको को वैज्ञानिक तरीके एवं विभिन्न उदाहरणों के साथ स्पष्ट किया कि प्रभु ईशा मसीह मात्र 3 वर्ष के अंदर मानव जाति को 'अहमब्रह्मास्मि' हमारे और परमात्मा के बीच दूरी शून्य है को अनुभव करने का वृहद प्रशिक्षण दिया। स्वामी जी ने आगे स्पष्ट किया कि मनुष्य जब सत्य की अनुभूति कर लेता है तो उसके और परमात्मा के बीच में दूरी शून्य हो जाती है। फिर वह यह अनुभव कर लेता है की मनुष्य के लिये कुछ भी असंभव नहीं है। अमरता के विज्ञान को सिद्ध करने के लिए ईसा मसीह सूली पर चढ़ गए और मरी हुई शरीर को पुनर्जीवित करने के उपरान्त स्वयं को अदृश्य कर स्वर्ग में प्रवेश किये। हमारे और प्रभु के बीच दूरी नहीं है, यही भारतीय संस्कृति है। जब मानव इस ज्ञान को प्राप्त कर लेता है तो उसकी सभी समस्याएं समाप्त हो जाती है। क्रियायोग ध्यान इस ज्ञान को प्राप्त करने का सरलतम उपाय है।कार्यक्रम में देश विदेश के साधकों ने भाग किया, जिसमे भारत मे विभिन्न राज्यो के साथ साथ अमेरिका, कनाडा, सिंगापुर, ब्राजील, यूरोप आदि देशों से साधक उपस्थित थे।

तुलसी दिवस पर पूजी गई मां तुलसी

सहसों। तुलसी का आध्यात्मिक एवं औषधीय गुणों से भरपूर तुलसी दिवस पर पूजी गईं मां तुलसी। क्षेत्र के राम जानकी मंदिर के पुजारी शीतला प्रसाद पांडे व्यास ने तुलसी पूजन दिवस पर विधि विधान से मां तुलसी की पूजा अर्चना कर सुख शांति और समृद्धि की कामना की। इस मौके पर मां तुलसी का श्रृंगार, पूजा एवं आरती के साथ सायंकाल दीपदान कर उनका आशीर्वाद भी भक्तों द्वारा लिया गया। इस मौके पर पुजारी ने कहा सनातन काल से मां तुलसी का कई कारणों से बहुत अधिक महत्व है। आज के युग में भी सभी हिंदू धर्मावलंबियों के आंगन में तुलसी का पौधा पूजनीय है। जिसका कारण आध्यात्मिक महत्व तो है ही इसके साथ-साथ औषधि गुणों से भरपूर होने के कारण और भी पूजनीय है। गत दिनों कोरोना काल मे घर घर तुलसी का काढ़ा, लोगों की बीमारी में रामबाण की तरह लाभकारी रहा।आचार्य दिनेश तिवारी द्वारा सहसों,बसमहुआ मे भक्तों के यहां वैदिक मंत्र उच्चारण से मां तुलसी की पूजा अर्चना तथा भव्य श्रृंगार एवं आरती कर आशीर्वाद प्राप्त किया।आचार्य ने बताया तुलसी धार्मिक आयुर्वेदिक सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्व के कारण घर-घर पूजनीय है। यह पर्यावरण एवं स्वास्थ्य की सुरक्षा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। तुलसी दल एक रक्तशोधक एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में बहुत ही कारगर है। अथर्व वेद में काली औषधि यानी श्यामा तुलसी को महा औषधि कहा गया है। भगवान विष्णु को प्रिय होने के कारण इसको वैष्णवी भी कहा गया है। उन्होंने कहा हर व्यक्ति को प्रतिदिन तुलसीदल जरूर सेवन करना चाहिए यह अवसाद रोधक एवं उत्साह स्पोर्ट्स सात्विकता वर्धक तथा शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में बहुत ही लाभकारी है। इसके अतिरिक्त मन की एकाग्रता एवं चित्त की शुद्धि, आध्यात्मिक शक्ति का विकास के साथ सुख शांति एवं समृद्धि में भी वृद्धि होती है।

अतीक अहमद के कब्जे से मुक्त जमीन पर मुख्यमंत्री रखेंगे आधारशिला

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार शाम को करीब पौने तीन घंटे प्रयागराज में रहेंगे। इस दौरान वह लूकरगंज में पूर्व सांसद अतीक अहमद के कब्जे से छुड़ाई गई जमीन पर गरीबों के लिए बनने वाले आवास का शिलान्यास करेंगे। एक अन्य कार्यक्रम में वह एक दर्जन से अधिक दूसरी योजनाओं का भी लोकार्पण एवं शिलान्यास करेंगे।

कौशाम्बी से आ रहे मुख्यमंत्री का हेलीकॉप्टर करीब पौने तीन बजे पुलिस लाइन में उतरेगा। वहां से वह शिलान्यास के लिए लूकरगंज पहुंचेंगे। इसके बाद लूकरगंज में ही डीएसए ग्राउंड के सामने स्थित मैदान में वह अन्य योजनाओं का लोकार्पण तथा शिलान्यास करेंगे। प्रधानमंत्री आवास समेत कई योजनाओं के लाभार्थियों को प्रमाणपत्र भी देंगे। मुख्यमंत्री लूकरगंज मैदान में आयोजित सभा को भी संबोधित करेंगे। इसके बाद वह केपी कम्युनिटी सेंटर में आयोजित कायस्थ पाठशाला के 150वें स्थापना वर्ष समारोह में शामिल होंगे। करीब सवा पांच बजे वह बमरौली एयरपोर्ट के लिए रवाना होंगे। मुख्यमंत्री के कार्यक्रम की तैयारियों को शनिवार को अंतिम रूप दिया गया। कैबिनेट मंत्री सिद्धार्थनाथ सिंह प्रशासन, पीडीए, नगर निगम तथा अन्य संबंधित विभाग के अफसरों आयोजन स्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि सपा शासन में माफिया को सरंक्षण मिलता था लेकिन अब रामराज कायम होगा।

लूकरगंज में आयोजित सभा को करेंगे संबोधित

कायस्थ पाठशाला के 150 वें समारोह में होंगे शामिल

एसडीएम के तेवर देख जेई को आया पसीना

अखंड भारत संदेश

एसडीएमी सौम्या गुरुरानी ने किया उच्च प्राथमिक विद्यालय शंकरगढ़ का निरीक्षण

27 बिंदुओं पर कायाकल्प योजना के तहत करवाए गए कार्यों में मिलीं खामियां

शंकरगढ़। उपजिलाधिकारी बारा सौम्या गुरुरानी ने उच्च प्राथमिक विद्यालय शंकरगढ़ का निरीक्षण शुक्रवार को किया। इस दौरान उन्होंने कायाकल्प योजना के तहत विद्यालय में 27 बिंदुओं पर करवाए गए प्रत्येक कार्य का स्थलीय सत्यापन किया। करवाए गए कार्यों में अनियमितता मिलने पर एसडीएम ने संबंधित जेई को जमकर फटकार लगाई। एसडीएम के तेवर देख मौके पर अन्य अफसर, कर्मचारी सकते में आ गए। एसडीएम ने जेई जयनाथ शर्मा से यहां तक कह डाला कि यदि आपसे काम नहीं हो पा रहा है, तो नौकरी छोड़ दीजिए। बहरहाल घंटेभर के निरीक्षण के दौरान उपजिलाधिकारी बारा सौम्या गुरुरानी ने टाइल्स, यूरिनल, वाश बेसिन, शौचालय, पेयजल, वाल पेंटिंग के साथ ही लगवाए गए सामानों की गुणवत्ता की भी जांच की।

जेई के द्वारा सही जानकारी नहीं देने पर एसडीएम ने कहा कि सही जानकारी दी जाए, अन्यथा वह अलग तरीके से भी जांच करवा सकती हैं। बहरहाल जिन-जिन कार्यों में खामी पाई गई है, उसे दोबारा बनवाने के लिए निर्देशित किया गया है। विद्यालय के निरीक्षण के उपरांत एसडीएम ने नगर पंचायत में बनवाई गई सीसी रोड का भी मुआयना किया। बता दें कि विद्यालय में कायाकल्प योजना के तहत करवाए गए कार्य पर 15 लाख रुपये खर्च किए गए हैं। जबकि काम की गुणवत्ता खराब हालत में पाई गई है।

उपजिलाधिकारी बारा शंकरगढ़ में उच्च प्राथमिक विद्यालय का निरीक्षण करतीं।

चालीस वर्ष बाद खाली हुआ चकमार्ग, ग्रामीणों ने की थी शिकायत

लालापुर। क्षेत्र के सोनवै गांव में चालीस वर्ष से एक सरकारी चकमार्ग पर दबंगों ने कब्जा कर के रखा था।ग्रामीणों ने उपजिलाधिकारी बारा से उक्त चकमार्ग के कब्जे की शिकायत की थी।उपजिलाधिकारी बारा ने राजस्व निरीक्षक व हल्का लेखपाल को चकमार्ग खाली कराने का आदेश जारी किया था।जिस पर राजस्व निरीक्षक व हल्का लेखपाल ने लगातार दिन दिन तक चकमार्ग को नाप कर खाली करा दिया।इस मौके पर राजस्व निरीक्षक संतोष राम यादव,लेखपाल मंजेश कुमार,विनय कुमार,संजय कुमार सहित राजस्व टीम उपस्थित रही।

न्यूज झरोखा

निदेशक संग बच्चों ने धूमधाम से मनाया क्रिसमस डे

करछना। क्षेत्र के जीवन ज्योति पब्लिक स्कूल बीरपुर में डायरेक्टर डॉ आरपी पांडे एवं चेयरमैन कुसुम पांडे की उपस्थिति 25 दिसम्बर क्रिसमस डे के अवसर बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम एवं मनमोहक झांकियां प्रस्तुत की गई बच्चों के द्वारा इसमें मुख्य रूप से सम्मिलित रहे डॉक्टर के के शुक्ला शिखा गुप्ता अर्चना गुप्ता साधना राय नंदिनी रवि राय सागर विकास संजय तिवारी शालिनी यादव समस्त टीचर एवं प्राचार्य उपस्थित रहे इसमें गार्जियन एवं स्कूल के समस्त स्टाफ उपस्थितत की गई बच्चों के द्वारा इसमें मुख्य रूप से सम्मिलित रहे डॉक्टर के के शुक्ला शिखा गुप्ता, अर्चना गुप्ता ,साधना राय ,नंदिनी रवि राय सागर ,विकास ,संजय तिवारी ,शालिनी यादव समस्त टीचर एवं प्राचार्य सहित स्कूल के सभी स्टाफ शामिल रहे।

बच्चों की खुशियों के लिए कामदार बने सेंटा क्लॉज

शंकरगढ़। क्रिसमस पर्व की पूरे जनपद में धूम है। गिरजाघरों में प्रशु यीशु का जन्मोत्सव बीती रात मनाया गया। चर्चों को आकर्षक लाइट से सजाया गया है। गिरजाघरों में अनुयायियों की भीड़ लगी हुई है। तो दूसरी तरफ बच्चों के सेंटा क्लास भी खुशियां बांट रहे हैं। क्रिसमस डे के मौके पर विकास खंड शंकरगढ़ के रामभवन चौराहे पर सेंटा क्लास ने बच्चों के बीच उपहार बांटा। बच्चों की खुशियों के लिए सेंटा क्लास की भूमिका शंकरगढ़ राज दरबार के वरिष्ठ बुजुर्ग नारसिंह सोलंकी कामदार साहब ने निभाई। शाम को वह सेंटा क्लास के कपड़े पहन कर रामभवन चौराहा पहुंचे और स्थानीय बच्चों के बीच टाफी, बिस्किट, चाकलेट सहित अन्य उपहार का वितरण किया। 86 वर्षीय नारसिंह सोलंकी कामदार साहब के साथ त्रियुगी मिश्र घंटी बजाते हुए नजर आए। दोनों ने राज दरबार से लेकर रामभवन चौराहे तक घूम-घूमकर उपहारों का वितरण किया। इस आयोजन में गोरेलाल सिंह, श्याम बहादुर सिंह, बृजभान सिंह, अमरेंद्र प्रताप सिंह, आजाद टेलर सहित तमाम लोगों ने सराहनीय योगदान दिया।

पूर्व पीएम का जन्म दिन सुशासन दिवस के रूप में मनाया गया

जसरा। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेई जी के जन्म दिवस को भारतीय जनता पार्टी के कार्यकताओं ने सुशासन दिवस के रूप में मनाया। जसरा में भाजपा के जिला मंत्री कमलेश त्रिपाठी ने कहा कि सरकार गरीब तबके के लोगों को सतत उठाने के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना ,शौचालय, मुफ्त रसोई गैस व मुफ्त में राशन देने का कार्य कर रही है। सरकार सदैव लोगों के प्रति संवेदनशील बनी हुई है। वहीं जसरा के मंडल अध्यक्ष जगत नारायण शुक्ला ने कहा कि हमें अटल जी जैसे मर्मज्ञ लोगों से सीख लेने की आवश्यकता है और उनके पद चिन्हों पर चलने की आवश्यकता है। कार्यक्रम में मंडल प्रबुद्ध वर्ग संयोजक राजाबाबू पाठक, अनुसूचित मोर्चा जिला मंत्री आशीष सोनकर युवा मोर्चा उपाध्यक्ष अश्वनी केसरवानी,मंडल मीडिया प्रभारी आलोक पाठक, अशोक तिवारी,आलोक दुबे, श्रीराम केसरवानी, आकाश केसरवानी ,दीप चंद्र गुप्ता, रवि केसरवानी, सिंधु विश्वकर्मा, अशोक सोनकर, बिहारी यादव आदि लोग उपस्थित रहे।

गरीबों व किसानों का विकास भाजपा सरकार में संभव

सहसों। सहसों में भाजपा की जन विश्वास यात्रा में सहसों ब्लॉक प्रमुख गीता सिंह, जिला उपाध्यक्ष अनिरुद्ध सिंह पटेल, जिला कोषाध्यक्ष आशीष केसरवानी, मंडल अध्यक्ष अनिल सरोज एवं ग्राम प्रधान विष्णु केसरवानी आदि की अगुवाई मे फूल मालाओं से भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। यात्रा में चल रहे मंत्री अनिल राजभर एवं जिलाध्यक्ष अश्वनी द्विवेदी ने कहा भाजपा सरकार में ही गरीबों, किसानों एवं मजदूरों का विकास संभव है। भाजपा सरकार में महिलाओं के सम्मान तथा उनके जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए कई कार्य किए गए। उन्होंने कहा वर्तमान समय में गरीबों को निशुल्क खाद्यान्न उज्ज्वला योजना आदि योजनाएं भी उनके जीवन स्तर को सुधारने में महत्वपूर्ण हैं। इस अवसर पर रमेश कुमार द्विवेदी, चंद्रेश केसरवानी, भूमि विकास बैंक फूलपुर के अध्यक्ष वीरेंद्र बहादुर सिंह, रमेश कुमार द्विवेदी, पवन कुमार शुक्ला, बृजेश कुमार त्रिपाठी, प्रमुख फूलपुर विपेन्द्र सिंह पटेल, राज धर द्विवेदी, लक्ष्मी सिंह चंदेल, रंजना परिहार, जितेंद्र सिंह, शिव नारायण सिंह गप्पू , मनोज कुमार त्रिपाठी, संजय सिंह, दया सिंह, सूर्यमणि पांडे, महेश सिंह, राजेंद्र केसरवानी सहित भारी संख्या में पदाधिकारी एवं कार्यकताओं ने पूरे जोशो खरोश से फूल मालाओं से भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया। भाजपा की जन स्वास्थ यात्रा को रास्ते भर कार्यकताओं द्वारा पुष्प वर्षा करते हुए स्वागत किया गया। सहसों चौराहे के पश्चात जन विश्वास यात्रा फाफामऊ की ओर रवाना हो गई।

नैनी में उच्चको ने कार से उड़ाए पचास हजार रुपए

अखंड भारत संदेश

नैनी कोतवाली में नहीं दर्ज की गई रिपोर्ट

सीसीटीवी कैमरे में संदिग्धों की कैद हुई फुटेज

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के आस्थायी छिवकी पुलिस चौकी के अंतर्गत आनंद नगर मोहल्ले के रहने वाले पंकज शुक्ला पुत्र अवध नारायण शुक्ला शुक्रवार सुबह लगभग 9:00 बजे वह करछना ब्लॉक में आयोजित दिव्यांगों हेतु उपकरण वितरण कार्यक्रम में शामिल होने के लिए अपने निजी निवास स्थान से कार द्वारा निकले, नैनी कोतवाली क्षेत्र मेवालाल की बगिया के समीप स्थित समृद्धि बैनर की दुकान पर कार्यक्रम से जुड़े बैनर लेने के लिए पहुंचे। वह भी अपनी सिल्वर रंग की वैगन-आर कार जिसका नंबर यूपी 70 अए 4711 से पहुंचे हुए थे। पंकज शुक्ला जल्दबाजी में अपने कार को लॉक करना भूल गए। मौका पाते ही शातिरों ने कार के अंदर रखे बैग को लेकर रफूचक्कर हो गए। जब वह कार से आगे जाने के लिए पहुंचे तो बैग गायब देख उनके होश उड़ गए। इतना ही नहीं लोगों की मौके पर भीड़ जुट गई और कुछ पुलिसकर्मी भी वहां पर पहुंचे। तभी एक अनजान नंबर से उनके मोबाइल पर फोन आया कि आपका बैग सब्जी मंडी के समीप कांच घर के निकट पड़ा हुआ है। वह कुछ मित्रों के साथ वहां पर पहुंचे और बैग की जांच पड़ताल किए तो बैग के अंदर से जरूरी कुछ कागजात एवं लगभग पचास हजार रुपए नकदी गायब मिला। सूचना मिलने पर पुलिस भी मौके पर पहुंची और हर बार की तरह दिखावे के लिए घटित वारदात की जांच पड़ताल की। वहीं सीसीटीवी कैमरे में संदिग्धों की फुटेज भी कैद हुई है। भुक्तभोगी ने रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए नैनी कोतवाली में तहरीर दी, लेकिन नैनी पुलिस को क्राइम ग्राफ को कम करने के लिए अगले दिन शनिवार तक समाचार लिखे जाने तक रिपोर्ट दर्ज नहीं कर पाए थे।

शातिरों के ऊपर नहीं होती है कोई कार्रवाई !

नैनी। बता दें कि बीते कुछ दिन पूर्व मामा भांजा इलाके से एटीएम फ्रॉड करने वाले को 0098 पीआरवी के जवानों ने हिरासत में लेकर नैनी कोतवाली पुलिस को सौंपा था, लेकिन अब तक उन लोगों का कोई भी खुलासा नैनी कोतवाली पुलिस नहीं कर पाई है। बताया जाता है कि उन लोगों को पूछताछ कर सुपुर्दगी में छोड़ दिया गया, बता दें कि बीते कुछ महीनों के अंतराल में ही नैनी कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न क्षेत्रों में टप्पे बाजी, मोबाइल छिनैती, एटीएम कार्ड बदलकर समेत कई वारदातों को शातिरों ने अंजाम दे चुके हैं, लेकिन नैनी कोतवाली पुलिस हाथ पर हाथ रखे बैठी हुई है। आला अफसरों को भी जानकारी होने के बाद भी कोई भी कार्रवाई करने से कतरा रही है।

जारी के थोक व्यापारी से मारपीट कर लूट लिए पचास हजार

जारी। हाइवे पर बारा थाना क्षेत्र के पटेल नगर के पास जारी के थोक ब्यापारी महेश केसरवानी को मारपीट कर पचास हजार रुपए की लूट लिया गया। उक्त घटना रात की है। बता दे कि कौंधियारा थाना क्षेत्र जारी बाजार निवासी महेश केसरवानी किराना का थोक ब्यापारी है। वह नारीबारी आदि बाजारों में सामान भेजता है। शुक्रवार को वह नारीबारी से वसूली करके देर रात लौट रहा था। पटेल नगर के पास दो बाइकों पर सवार चार लोगों ने उसे रोक लिया। ब्यापारी की जम कर पिटाई की और उसके पास से पचास हजार रुपए लूट लिया। ब्यापारी ने रात में ही बारा पुलिस को सूचना दी है। पुलिस प्रकरण की जांच कर रही है और संदिग्धों की तलाश में जुटी हैं। लूट की घटना से जारी व आसपास के ब्यवसाइयों में आक्रोश है।

इलेवन स्टार क्रिकेट टूनार्मेंट खपटिहा में युवा चैलेंजर टीम ने मारी बाजी

अखंड भारत संदेश

लेडियारी। इलेवन स्टार क्रिकेट टूनार्मेंट खपटिहा में हो रहे फाइनल मैच बड़ा ही रोमांचक मोड़ लेते हुए समाप्त हुआ। जिसमें युवा चैलेंजर ने डिहार क्रिकेट क्लब को बड़े ही कड़े मुकाबले में दो विकेट से हराया फाइनल मैच के मुख्य अतिथि समाजवादी पार्टी प्रत्याशी ओम सहाय जी रहेंक जिन्होंने फाइनल मैच के बाद दोनों ही टीमों को पुरस्कार वितरित कर उनके उज्जवल भविष्य की हेतु शुभकामना दिया।और आगे बताया कि ऐसे आयोजनों से क्षेत्रीय खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन होता है और छिपी हुई प्रतिभा निखर कर आती है। तत्पश्चात क्रिकेट टूनार्मेंट के आयोजक टीम को भी पुरस्कृत एवं सम्मानित कर उन्हें बधाई दी है कि आप सब के कारण ही इतना अच्छा आयोजन हो सका। संपूर्ण दक्षिणांचल में अच्छे-अच्छे खिलाड़ियों की संख्या है सिर्फ उन्हें निखारने की जरूरत है। जहां पर उपस्थित हजारों की संख्या में दर्शकों ने भी हो रहे फाइनल मैच का लुफ्त उठाया। उक्त मौके पर मुख्य रूप से वेद प्रकाश ,लवकुश कुमार, सुनील गुप्ता, माशूक अहमद, प्रशांत सिंह, यजुवेंद्र अहीर, आर के पटेल, सफात अली, मनीष कुमार, अनिल केसरी, डॉ मिश्रा, मुकेश द्विवेदी, नसीम अहमद, निजाम खान, संजय चौधरी, रविंद्र गुप्ता, रजत केसरी आदि के अलावा हजारों की संख्या में दर्शक मौजूद रहे ।

सफाई कर्मचारी संघ ने प्रदेश सरकार से पेंशन बहाल किए जाने की मांग

अखंड भारत संदेश

करछना। उत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ जनपद शाखा प्रयागराज के जिला अध्यक्ष दयाशंकर यादव जिला मंत्री तेज बहादुर भारतीया जिला कोषाध्यक्ष आनन्द कुमार सोनकर एवं समस्त ब्लॉक अध्यक्ष ब्लॉक मंत्री ब्लॉक कोषाध्यक्ष के द्वारा अपने खून से माननीय प्रधानमंत्री मुख्यमंत्री प्रमुख सचिव पंचायती राज मंत्री को सरदार पटेल संस्थान एलोपीबाग चुंगी लिखा पत्र बैठक में जिलाध्यक्ष दयाशंकर यादव जिला कोषाध्यक्ष आनंद कुमार सोनकर ब्लॉक अध्यक्ष रामबाबू भारती ब्लॉक कोषाध्यक्ष धर्मेंद्र कुमार ब्लॉक अध्यक्ष गुलाबचंद ब्लॉक कोषाध्यक्ष जगदीश ब्लॉक अध्यक्ष ओम चंद्र भारतीय ब्लॉक अध्यक्ष रामनरेश भारतीय ब्लॉक अध्यक्ष अजय कुमार ब्लॉक अध्यक्ष अजीत सिंह ब्लॉक अध्यक्ष जगतपाल ब्लॉक अध्यक्ष अरविंद कुमार पटेल ब्लॉक अध्यक्ष कमलेश कुमार यादव जिला कार्यकारिणी अध्यक्ष अखिलेंद्र कुमार राम दरस यादव शिव प्रकाश यादव प्रदीप सागर शिवधारी प्रजापति ब्लॉक अध्यक्ष अरुण कुमार गौतम विद्या प्रकाश ब्लॉक मंत्री भैया राम यादव दयाराम बिन्द धर्मेंद्र कुमार भारतीय सुरेंद्र कुमार बिंद अनिल पाल समस्त कर्मचारी मौजूद रहे।

वित्तविहीन शिक्षकों के अधिकार की लडाई केलिए संघर्ष करता रहूंगा : लाल बिहारी

अखंड भारत संदेस

जिला सम्मेलन में उपस्थित सभी शिक्षकों को दिलाया भरोसा

करछना। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ (वित्तविहीन गुट) के प्रदेश अध्यक्ष सदस्य विधान परिषद लाल बिहारी यादव ने स्थानीय सरदार पटेल सेवा संस्थान में किसान भवन सभागार में प्रयागराज जनपद के जिला सम्मेलन में शिक्षक समुदाय के समक्ष व्यक्त किए लाल बिहारी यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री के आगमन पर वाराणसी अस्सी घाट पर धरने के दौरान जिलाधिकारी के मध्यस्थता मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बाबतपुर हवाई अड्डे पर मेरे नेतृत्व में मिले प्रतिनिधिमंडल के 5 शिक्षक नेताओं से खुला जवाब मिला था कि प्रबंधक ही नियोक्ता है वही मानदेय देगा ज्ञात हो कि पूर्ववर्ती

शिक्षक संघ वित्त विहीन गुट प्रयागराज जिला सम्मेलन में उपस्थित लोग

अखिलेश सरकार इस माध्यमिक वित्तविहीन विद्यालय के शिक्षकों को 2 अरब रू मानदेय के रूप में दिया था जिसमें 96करोड़ रुपए शिक्षकों के मानदेय का पैसा सरकार ने अपने खाते में वापस ले लिया। कोरोना काल का दंश झेल रहे शिक्षक भुखमरी के कगार पर हैं, परंतु शर्म की बात है कि सरकार जिस आशीर्वाद यात्रा तथा सम्मेलनों में आए रुपए बर्बाद कर रही है। सपा सरकार बनने पर ही आप का कल्याण होगा। सम्मेलन को संबोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि पूर्व शिक्षा निदेशक माध्यमिक व सदस्य विधान परिषद वासुदेव यादव जी ने लाल बिहारी यादव की वित्तविहीन शिक्षकों के लिए किए जा रहे संघर्ष की प्रशंसा करते हुए कहा है कि सरकार बनने पर ही मानदेय मिलेगा।इस अवसर पर जिला अध्यक्ष ननकेस बाबू नें जिला सम्मेलन में उपस्थित सभी शिक्षकों को आभार व्यक्त करते हुए सम्मेलन सफल बनाने के लिए सभी का अभिवादन किया।

बहुप्रतीक्षित बाईपास का नितिन गडकरी ने किया शिलान्यास

2022 में बाईपास का कार्य पूरा होने का दिया निर्देश, भुपियामऊ से सुखपालनगर तक बनेगी फोन लेन सड़क

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ शहर को बहुप्रतीक्षित बाईपास का शिलान्यास केन्द्रीय भूतल एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने आज सुखपाल नगर में हजारों की तालियों के बीच बटन दबाकर किया। यह 14 किमी का बाईपास सुखपाल नगर से प्रतापगढ़-सुल्तानपुर राजमार्ग पर गोडे. में निकलेगा। 2022 में इस बाईपास का कार्य पूरा हो जायगा।

इस दौरान सांसद संगम लाल गुप्ता की मांग पर सुखपाल नगर से भुपियामऊ तक चार लेन की सड़क बनाने की घोषणा की। इसी के साथ प्रतापगढ़-सुल्तानपुर पर मार्ग राम वन गमन होने के कारण चैड़ी बनी है। इसका भी लोकार्पण करते हुए केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि पूरे उत्तर प्रदेश में राजमार्ग का जाल बिछाया जा रहा है और जल्दी लोग अमेरिका से अच्छी सड़क उत्तर प्रदेश और प्रतापगढ़ की जनता को

बाईपास के शिलान्यास का बटन दबाकर उद्घाटन करते नितिन गडकरी।

मिलेगा। नितिन गडकरी ने कहा कि गांवों में सड़क बनाने का कार्य पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने किया, उनके योगदानों को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने मंत्री मोती सिंह, सांसद संगम लाल व पूर्व सांसद राजकुमारी रत्ना सिंह की सड़क की मांगों का पूरा करने का आश्वासन दिया। श्री गडकरी शनिवार को सुखपाल नगर में बाईपास का शिलान्यास करने के बाद जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। इसके पूर्व प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि उत्तर प्रदेश में जो कार्य 50 वर्षों में नहीं हुआ, वह पांच वर्षों में हो गया। पूरे प्रदेश में राजमार्गों का जाल बिछ गया है। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में गुण्डाराज का सफाया कर सुशासन का राज्य स्थापित किया गया। उन्होंने जनता का आवाहन किया कि 2017 से ज्यादा मतों से इस बार प्रत्याशियों को जिताएं। इस मौके पर प्रदेश सरकार के मंत्री मोती सिंह ने केन्द्रीय मंत्री व उप मुख्यमंत्री का स्वागत किया। इस मौके पर पूर्व सांसद राजकुमारी रत्ना सिंह, विधायक रानीगंज अभय प्रताप सिंह धीरज ओझा, पूर्व विधायक हरिप्रताप सिंह, जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र, पूर्व जिलाध्यक्ष केके सिंह, शिव प्रकाश मिश्र सेनानी सहित बड़ी संख्या में भाजपा के पदाधिकारी, सेक्टर प्रभारी व बूथ प्रभारी सहित हजारों कार्यकर्ता मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन विवेक उपाध्याय ने किया। सदर विधायक राजकुमार पाल ने आभार व्यक्त किया।

मथुरा के कलाकारों ने बांधी शमा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। केन्द्रीय भूतल एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी व उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के आने से पहले कार्यक्रम स्थल पर मथुरा के कलाकारों ने भीड़ को नियंत्रित करने के लिये अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। उनकी प्रस्तुति देख लोगों ने उनकी कला को खूब सराहा। इस दौरान गीतकार रविशंकर मिश्र ने गीत सुनाकर लोगों की तालियां बंटोरी। इस दौरान मथुरा के कलाकारों को देखने के लिये भीड़ उमड़ी रही।

जमीनी रंजिश में पड़ोसियों ने लाठी डंडे से किया हमला, आधा दर्जन जख्मी

जमीनी विवाद में युवक पर हुआ हमला

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के रायगढ़ में जमीनी विवाद की रंजिश को लेकर एक परिवार पर पड़ोसियों ने जमकर लाठी-डंडे से हमला किया जिससे कुल आधा दर्जन लोग जख्मी हो गए। दो लोगों की हालत गंभीर होने पर उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया।

पट्टी कोतवाली क्षेत्र के रायगढ़ गांव के रहने वाले मोहम्मद अली पुत्र इंसाफ अली ने बताया कि शनिवार की सुबह छह बजे जमीनी विवाद को लेकर उसके पड़ोसी एकजुट होकर के घात लगाकर लाठी डंडे से मारने पीटने लगे शोर-शराबा होने पर परिवार के लोग आए तो लाठी डंडे से मार कर सलीम, अलीम, साजिदा, माजिदा तथा असलम को भी आरोपियों को पीटकर जख्मी कर दिया। सभी घायलों सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पट्टी लाया गया जिसमें असलम और माजिद एक की हालत गंभीर होने पर उसे जिला अस्पताल मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया। पीड़ित ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में तहरीर दिया है पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है। उधर पड़ोसियों से जमीनी विवाद के चलते युवक को पड़ोसियों ने लाठी डंडा से मारते हुए गाली देते हुए जान से मारने की धमकी दी। पीड़ित ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर इंसाफ की गुहार लगाई है। सरसतपुर गांव के रहने वाले प्रमोद कुमार का आरोप है कि उसकी गाटा संख्या में पड़ोसी जबरन पेड़ कटवा रहे थे। जब पीड़ित ने रोकने की कोशिश की तो पड़ोसी दबंगई दिखाते हुए मां बहन की भद्दी भद्दी गालियां देते हो जान से मारने की धमकी दी तथा लाठी डंडे से मारा पीटा। पीड़ित ने इस संबंध में पट्टी कोतवाली में तहरीर दी है।

साहित्यकारों ने सुमित्रानंन की बनी मूर्ति पर किया माल्यार्पण

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। हिंदी साहित्यकारों का एक जत्था शनिवार को डिग्री कालेज कालाकांकर में सुमित्रानंदन पंत की बनी मूर्ति पर माल्यार्पण किया। उसके बाद कालाकांकर में टीले पर बनी नक्षत्र सुमित्रानंदन पंत की कुटिया में रुककर वहां की यादों से रूबरू होते हुए परिचर्चा किया।

कालाकांकर राजघराने के कुँवर मनीष सिंह व राजभवन मैनेजर डॉ0 घनश्याम यादव ने पन्त के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी, जिसमें मुख्य रूप से डॉ उदय प्रताप सिंह अध्यक्ष हिंदुस्तानी एकेडमी, अनिल जोशी उपाध्यक्ष केंद्रीय हिंदी संस्थान, प्रो0 बीना शर्मा निदेशक केंद्रीय हिंदी संस्थान, प्रो0 अमरेंद्र त्रिपाठी, प्रो0

सुमित्रानंदन पंत्र की मूर्ति पर माल्यार्पण करते साहित्यकारगण।

आशुतोष सिंह, डॉ सुजीत सिंह, डॉ विन्नम सेन सिंह प्रयागराज विश्वविध्यालय, कवित्री अलका दिल्ली, नरेश शांडिल्य दिल्ली, मनोज कुमार मेरठ सहित अन्य साहित्कार मौजूद रहे।

पूर्व विधायक ने आधा दर्जन गांव में किया जनसम्पर्क

पट्टी, प्रतापगढ़। समाजवादी पार्टी के पूर्व विधायक राम सिंह पटेल शनिवार को पट्टी विधानसभा क्षेत्र के कई गांव में संपर्क अभियान चलाकर लोगों से मुलाकात किया। क्षेत्र के रामपुर खागल में धनंजय ओझा के आवास पर मुलाकात किया। इसी प्रकार बिरौती गांव में अमर सिंह यादव तथा बंधवा, पहारा मुरारपट्टी, भदवछ आदि गांव में मुलाकात करके लोगों से समाजवादी पार्टी के पक्ष में मतदान करने की अपील किया। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी की रैलियों में जनसैलाब दिखाई दे रहा है वहीं भाजपा जनसभा तो कर रही है लेकिन सरकारी तंत्र का दुरुपयोग करने और जबरन लोगों को इकट्ठा करने के बावजूद भी वह भीड़ दिखाई नहीं दे रही है जिससे भाजपाई बौखलाहट में हैं। उन्होंने कहा कि क्षेत्र की जनता के हित के लिए वह हमेशा सजग हैं।

धूमधाम के साथ मना प्रभु यीशू का जन्मोत्सव

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रभु यीशू मसीह का जन्मोत्सव शनिवार को धूमधाम के साथ मनाया गया। इस मौके पर चर्च और गिरजाघरों को सजाया गया और वहां मानव प्रेम एवं शांति को प्रार्थना सभाएं भी आयोजित हुई। क्रिसमस डे उपलब्ध में शुक्रवार से ही विभिन्न विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रम शुरू हो गये। शुक्रवार की पूर्व संध्या पर अम्बेडकर चैराहे समेत कई स्थानों पर क्रिसमस ट्री लगाये गये। चर्च और गिरजाघरों को झालरों से सजाया गया। आधी रात के बाद वहां शांति के लिये प्रार्थना सभाएं शुरू हो गयी। इस मौके पर विभिन्न रंग-बिरंगी पोशाकों में सजे-धजे बच्चे आकर्षक लग रहे थे। उनके सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने सभी का मन मोहा। क्रिश्चियन कालोनियों में सुबह से ही उत्सव जैसा माहौल रहा। सेन्टा क्लाज की शक्ल में लोग घर-घर पहुंचकर बच्चों को उपहार बांट रहे थे। शुक्रवार की रात बारह

गिरजाघरों में प्रार्थना करती महिलाएं।

बजे चर्चो में भारी भीड़ थी। महिलाएं, बच्चे सभी ने मिलकर प्रार्थना की। रात में ही प्रभु यीशू के जन्मदिन पर केक काटे गये। भोर तीन बजे तक यह कार्यक्रम चला और शनिवार को दिन भर चर्चों में भीड़ रही। लोगों का कहना है कि देर रात तक आज चर्चों में सजे हुए गिरजाघरों में आनंद उठाए। प्रातः नौ बजे भी गिरजाघरों में प्रार्थना सभा हुई और आज शाम फिर गिरजाघरों में भीड़ रही।

बहुमुखी विकास ही रामपुरखास की मजबूती की पहचान : प्रमोद तिवारी

सड़क एवं पेयजल परियोजनाओं का सीडब्ल्यूसी मेंबर ने किया भूमिपूजन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के द्वारा स्वीकृति कराई गई दो नवीन पेयजल टंकियो के साथ शनिवार को सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी ने एक सड़क परियोजना की भी ग्रामीणों को सौगात सौंपी।

श्री तिवारी ने विधायक मोना की ओर से कटरिया तथा बडहुआं मे करोडो की लागत से बनने वाली पीने के पानी की टंकी व उस्मानपुर संपर्क मार्ग के लिए अड़तीस लाख की लागत से स्वीकृत सड़क परियोजना का भी समारोहपूर्वक भूमिपूजन किया। कटरिया मे आयोजित विशाल जनसभा को बतौर मुख्यअतिथि संबोधित करते हुए प्रमोद तिवारी ने कहा कि बहुमुखी विकास का गुणवत्तापूर्ण पारदर्शी संचालन ही रामपुरखास की सर्वश्रेष्ठता है। उन्होनें कहा कि जिले के सीमावर्ती कटरिया तथा बडहुआ

उस्मानपुर सम्पर्क मार्ग का शिलान्यास करते सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी।

गांव मे पीने के पानी की शुद्ध उपलब्धता से लोगों को अब संक्रामक रोगों से बचाव का मिशन भी पूरा नजर आयेगा। सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी ने कहा कि समग्र विकास का पहिया रामपुरखास मे जनता के सहयोग के बूते विधायक मोना की अगुवाई मे निरंतर मजबूत दिखेगा। इस मौके पर जिला पंचायत सदस्य रिंकू सिंह परिहार व पूर्व प्रमुख दगपाल यादव, छोटेलाल सिंह, डा. वीरेन्द्र सिंह, मंहगू सरोज, मेवालाल गुप्ता, अनिल सिंह, अवधेश सिंह, प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी, मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल, डा. अमिताभ शुक्ल आदि मौजूद रहे।

मित्र परिषद इलाहाबाद प्रयागराज द्वारा संचालित प्रतिभा खोज परीक्षा सम्पन्न

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर के शत्रुध्न प्रसाद मौर्य स्मारक जूनियर हाई स्कूल पूरे धनऊ परियाँवा में प्रतिभा खोज परीक्षा आयोजित की गई जिसमें प्राइमरी से लेकर स्नातक तक के बालक और बालिकाओ ने बढ़-चढ़कर अपनी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। विद्यालय के केन्द्र ब्यवस्थापक कुंवर बहादुर मौर्य, श्री सुखई राम, शिक्षक लक्ष्मी मौर्या, गीता मौर्या, श्रीराम मौर्या, नीलम मौर्या, शिवम, राम प्यारे पूर्व एनपीआरसी, जिला पंचायत सदस्य अनिल कुमार मौर्य, जिला पंचायत सदस्य कालाकांकर, रमेश चंद्र मौर्य, ज्ञान चन्द्र यादव, पूजा, रामबरन मौर्य, शिवबहादुर मौर्य, अनिल मौर्या ग्राम प्रधान, अनंत राम मौर्य, त्रिभुवन नाथ मौर्य, राजेश मौर्य, मेवा लाल मौर्य, भाई लाल मौर्या आदि की उपस्थिति में परीक्षा सम्पन्न कराई गई। प्रतिभा खोज परीक्षा में श्रद्धा प्रथम स्थान व सौम्या द्वितीय स्थान पर रहीं। ज्योति मौर्या, साक्षी मौर्या, अर्शिता मौर्या, शिवा मौर्या, आकाश कुमार, मुकेश कुमार, खुशी, सुहानी, सपना, प्रिया, हिमांशु मौर्य ने अच्छा प्रदर्शन किया जिनको विद्यालय की तरफ से मेडल देकर सम्मानित किया गया।

अटल जी की मूर्ति का अनावरण करते पूर्व विधायक हरिप्रताप सिंह व नपाध्यक्ष प्रेमलता सिंह।

पूर्व प्रधानमंत्री के जन्मदिवस पर बाबागंज पार्क में स्थापित हुई अटल जी की मूर्ति

अब बाबागंज पार्क अटल वाटिका के नाम से जाना जाएगा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्मदिवस सुशासन रुप से मनाये जाने के लिये नगर पालिका बेल्हा प्रतापगढ़ द्वारा बाबागंज स्थित पार्क में भव्य आयोजन किया गया। नगर पालिका द्वारा बाबागंज स्थित पार्क का नामकर अटल वाटिका के रुप में करते हुए मध्य में भारत रत्न विभूषित प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की प्रतिमा स्थापित की गई जिसका अनावरण नगर पालिका अध्यक्षा प्रेमलता सिंह द्वारा शनिवार को किया गया।

कार्यक्रम में पहुंची नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह व पूर्व विधायक हरिप्रताप सिंह का अटल वाटिका में बैण्डबाजे के साथ स्वागत किया गया। इसके बाद पालिकाध्यक्षा द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के बीच प्रतिमा का अनावरण किया गया। प्रतिमा का अनावरण होते हुए उपस्थित जनसमूह द्वारा भारत माता की जय व अटल अमर रहें के नारों से गूंज उठा। सुशासन दिवस पर नगर पालिका अध्यक्षा प्रेमलता सिंह व पूर्व विधायक हरिप्रताप सिंह ने शहर के 150 वरिष्ठ नागरिकों को माला पहनाकर तथा अंगवस्त्रम भेंट कर अभिनंदन किया। इस अवसर पर आयोजित सभा में हरिप्रताप सिंह ने अटल बिहारी के व्यक्तित्व को अद्वितीय बताते हुए कहा कि अटल जी एक कुशल प्रशासक होने के साथ ही सरल व मृदुभाषी थे। उन्होंने कहा कि मुझे अपने पिता जी के माध्यम से अटल जी को नजदीक से देखने का सौभाग्य मिला। उनका सादा जीवन और उच्च विचार हर भारतीय के लिये प्रेरणास्रोत है। इस अवसर पर अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह ने सभी के प्रति आभार जताया। इस मौके पर गणेश नारायण मिश्र, सरदार मंजीत सिंह, श्याम नारायण मिश्र, शिवमूर्ति त्रिपाठी, द्वारिकानाथ मेहरोत्रा, मंजू त्रिपाठी, माधुरी सिंह, अनीता केसरवानी, उदयशंकर मिश्रा, छाया श्रीवास्तव, अनिल सिंह, ज्ञानेश मिश्र, आशुतोष सिंह, धर्मशील, दीपक, प्रवीण, आशीष जायसवाल आदि उपस्थित रहे।

लूट के मोबाइल फोन के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना कोतवाली नगर से उ0नि0 गिरीशधर दुबे मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थानाक्षेत्र के कटरा चैराहे के पास से मु0अ0सं0 1073/2021 धारा 392, 413, 411 भादंवि से सम्बन्धित एक अभियुक्त संतोष पुत्र नन्हेलाल सरोज नि0 कटरा गोपुपुर थाना सांगीपुर को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से मुकदमा उपरोक्त से संबंधित एक अदद लूट का मोबाइल फोन बरामद किया गया।

देसी बम के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना लालगंज से उ0नि0 विनीत कुमार उपाध्याय मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के रायपुर तियाई चैराहे के पास से एक व्यक्ति सद्दाम खान पुत्र अलेमान निवासी कुरैशी का पुरवा, राहटीकर थाना उदयपुर छह देसी बम के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त बरामदगी के सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 824/21 धारा 4/5 विष्फोटक पदार्थ अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया गया है।

अवैध देसी कच्ची शराब के साथ चार अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना कुण्डा से उ0नि0 शिव प्रसाद रावत मय टीम द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के बेंती तिराहे के पास से एक व्यक्ति अजीत कुमार पुत्र राम आसरे निवासी समसपुर थाना हथिगवां, को 20 लीटर अवैध देसी कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। उधर उ0नि0 संतोष कुमार पासवान मय टीम द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के खेमीपुर नहर की पुलिया के पास से एक व्यक्ति जितेन्द्र कुमार पुत्र रामहरख निवासी बेंती विनत उपहार थाना हथिगवां 20 लीटर अवैध देसी कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। उधर उ0नि0 विनय कुमार सिंह मय टीम द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के सुबंशा चैराहे के पास से एक व्यक्ति सुरेन्द्र कुमार पुत्र ओम प्रकाश निवासी कुशाहिलडीह थाना मानिकपुर को 20 लीटर अवैध देसी कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। उक्त तीनों बरामदगी के संबंध में थाना स्थानीय पर क्रमशः मु0अ0सं0 429/21, 430/21, 431/21 धारा 60 आबकारी अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया गया है। उधर थाना बाघराय से उ0नि0 दुर्गेश कुमार मय टीम द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान थाना क्षेत्र के माली का पुरवा मोड़ के पास से एक व्यक्ति महेन्द्र कुमार पुत्र मुन्नू लाल सरोज निवासी पूरे खोथई थाना बाघराय, जनपद प्रतापगढ़ को 15 लीटर अवैध देसी कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। इस सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 338/21 धारा 60 आबकारी अधिनियम का अभियोग पंजीकृत किया गया है। उधर थाना कंधई से उ0नि0 शैलेन्द्र कुमार तिवारी मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग/तलाश वांछित, वारण्टी अभियुक्त के दौरान मु0सं0 02/19 धारा 135 विद्युत अधिनियम से संबंधित वारण्टी अभियुक्त अनिल पुत्र बृजलाल निवासी वारी कला थाना कंधई को उसके घर से गिरफ्तार किया गया।

दो वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। थाना मांधाता से उ0नि0 सुधीर कुमार पाण्डेय मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग/तलाश वांछित, वारण्टी अभियुक्त के दौरान थाना स्थानीय के मु0अ0सं0 146/20 धारा 147, 148, 149, 323, 307, 504, 506 भादंवि से संबंधित वांछित अभियुक्त मो0 खलील पुत्र स्व0 जमील निवासी रामपुर थाना मांधाता को थाना क्षेत्र के ग्राम लिलौली के पास से गिरफ्तार किया गया। उधर थाना मांधाता से उ0नि0 धीरेन्द्र ठाकुर मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग/तलाश वांछित, वारण्टी अभियुक्त के दौरान थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0 468/21 धारा 363, 366 भादंवि से संबंधित वांछित अभियुक्त वीरेन्द्र कुमार पटेल उर्फ लम्बू पुत्र रामकुमार पटेल नि0 दिवैनी थाना मांधाता को थाना क्षेत्र के छितपालगढ़ चैराहा रोड के पास से गिरफ्तार किया गया।

खबर संक्षेप

ग्राम पंचायत की बैठक में परिवेक्षक रहे नदारद

कौशाम्बी। योगी सरकार में ग्राम प्रधान सहित ग्रामीण जनता में न्याय की उम्मीद टूटी क्योंकि ग्राम प्रधान 6 महीने से अधिकारियों एवं विधायकों का चक्कर लगाते लगाते थक गए लेकिन कोई सुनवाई नहीं हो रही है।बार बार रोजगार सेवक को हटाने की बैठक बुलाई जाती है। मौके पर जिम्मेदार अधिकारी ही गायब हो जाते है ब्लॉक मंझनपुर के तियरा जमालपुर में रोजगार सेवक को पद से हटाने के लिए बैठक बुलाई गई। लेकिन बैठक में पर्यवेक्षक नहीं पहुंच सके हैं जिससे बैठक नहीं सफल रही है।

तमंचा के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना करारी पुलिस बल द्वारा अभियुक्त सुमित कुमार उर्फ गुंडेबाज पुत्र छेदू निवासी अर्कामहावीरपुर थाना करारी को मुखबिर खास की सूचना पर 01 अदद तमंचा व 02 जिंदा कारतूस के साथ गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

सीएम का आगमन आज तैयारियां जोरों पर

जिले के तीनों विधायक संजय गुप्ता शीतला प्रसाद पटेल और लाल बहादुर मुख्यमंत्री के स्वागत की तैयारी में पूरी तरह से जुटे

मुख्यमंत्री आगमन के पूर्व तैयारियों का जायजा लेते पुलिस महानिरीक्षक प्रयागराज

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रविवार को जनपद मुख्यालय मंझनपुर के डायट मैदान में आ रहे हैं मुख्यमंत्री के आगमन की तैयारी को लेकर जिलाधिकारी पुलिस अधीक्षक सहित सरकारी महकमा उनके आगमन की तैयारी में लगा हुआ है मुख्यमंत्री की सभा को लेकर डायट मैदान में विशाल पांडाल बनाया जा रहा है जिले के तीनों विधायक संजय गुप्ता शीतला प्रसाद पटेल और लाल बहादुर मुख्यमंत्री के स्वागत की तैयारी में पूरी तरह से लगे हैं पूरा डायट मैदान स्वर्ग की तरह सजाया जा रहा है मुख्यमंत्री के आगमन को लेकर डायट मैदान के हरे पेड़ों को भी नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी ने कटवा दिए हैं मुख्यमंत्री के आगमन की जानकारी जैसे ही जिला प्रशासन और पुलिस अधीक्षक को लगी है रात की नींद और दिन का चैन छिन गया है आईजी जोन ने भी मुख्यमंत्री आगमन के स्थल का निरीक्षण किया है और अधीनस्थों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए हैं।

डीजल टैंकर पलटा खलासी व ड्राइवर हुए घायल

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। प्रयागराज से चित्रकूट जा रहा डीजल टैंकर मंझनपुर कोतवाली के महेवा घाट रोड पर कोडर गांव के पास पलट गया है डीजल का टैंकर पलटते ही मौके पर लोगों की भीड़ लग गयी हजारो लीटर डीजल ग्रामीण लूट ले गए पुलिस ने क्रेन की मदद से टैंकर को सीधा कराया टैंकर पलटने से हादसे में घायल लोगों को पुलिस ने इलाज के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया है। जानकारी के मुताबिक मंझनपुर कोतवाली के कोडर गांव के पास शुक्रवार की देर रात डीजल से भरा टैंकर पलट गया है टैंकर पलटते ही चालक खलासी वाहन के नीचे दब गए हैं मामले की सूचना मिलते ही आसपास के ग्रामीण मौके पर जुट गए हैं घायलों की मदद करने के बजाय ग्रामीण डीजल लूटने में लग गए हैं मामले की जानकारी पुलिस को लगी मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को बाहर निकालकर इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है।

टैंकर पलटते ही डीजल लूटने लगे ग्रामीण

लापता किशोर का मिला शव

कौशाम्बी पिपरी थाना क्षेत्र के कादिलपुर में लापता किशोर का शव मिलने से हड़कंप मच गया है पिछले 2 दिन से किशोर लापता था पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है पिपरी थाना क्षेत्र के कदिलपुर में मिला शव।

कोरोना संक्रमण के दृष्टिगत कार्यवाही

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के निदेर्शानुसार जनपद स्तर पर विभिन्न थानों द्वारा अनावश्यक रूप से बाहर घूमने मास्क न लगाने एवं सोशल डिस्टेसिंग का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिनमें 114 वाहनों का ई चालान किया गया।

न्यूज झरोखा

कौशांबी की छात्राओं को मुख्यमंत्री ने दिया स्मार्टफोन टेबलेट

जिले के 4 विद्यालयों की 200 छात्राओं को शनिवार की सुबह बस से प्रधानाचार्य लेकर गए लखनऊ

कौशाम्बी। उत्तर प्रदेश शासन की स्मार्टफोन टेबलेट वितरण योजना में जनपद कौशांबी के लिए चयनित 200 छात्र- छात्राओं में से महामाया राजकीय महाविद्यालय की 50 छात्र-छात्राओं ने लखनऊ स्थित भारत रत्न श्री अटल बिहारी बाजपेई इकाना स्टेडियम में प्राप्त किया।शेष पंजीकृत एवं चयनित छात्र-छात्राओं जिन्हें बाद में स्मार्टफोन उत्तर प्रदेश शासन द्वारा उपलब्ध कराया जाएगा।

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा भारत रत्न श्री अटल बिहारी बाजपेई इकाना क्रिकेट स्टेडियम, लखनऊ में युवा जन शक्ति को टेबलेट स्मार्टफोन वितरण कार्यक्रम का सजीव प्रसारण जिलाधिकारी कार्यालय के उदयन सभागार में अवलोकन हेतु उपस्थित रहे महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा इस सजीव कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया गया उन्होंने बहुत ही उत्साह पूर्वक इस कार्यक्रम का सजीव अवलोकन किया और इस कार्यक्रम से उनके अंदर नई ऊर्जा और जोश का संचार हुआ।इस सजीव प्रसारण के अवसर पर महाविद्यालय के प्राध्यापक प्राध्यापकगण कर्मचारी, बेसिक शिक्षा अधिकारी, जिला विद्यालय निरीक्षक आदि उपस्थित रहे।

एसपी मौर्य कांवेंट में धूम धाम से मनाया गया क्रिसमस पर्व

कौशाम्बी। एसपी मौर्य कॉन्वेंट स्कूल एंड कॉलेज हर्रायपुर आलम चंद्र के प्रांगण में क्रिसमस डे का कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से मनाया गया । इस मौके पर फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता ,भाषण प्रतियोगिता ,क्राफ्ट प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया ।कार्यक्रम में प्रियांशी शर्मा कक्षा नर्सरी रौनक मिश्रा कक्षा 7 सृष्टि मिश्रा कक्षा दो सिदरा साहबान कक्षा 7 दिव्यांशी सिंह कक्षा 7 सिफा कक्षा 6 बेबी कक्षा नर्सरी साक्षी पाल कक्षा 7 कृतिका यादव कक्षा 5 अनन्या मौर्या कक्षा 1 राजश्री मौर्य कक्षा 1 खदीजा यूकेजी साजिया बानो 3 विभय प्रताप सिंह कक्षा 2 मोहम्मद रय्यान कक्षा 4 स्नेहा कक्षा 9 आदि ने प्रथम स्थान प्राप्त किया सभी को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। बच्चों ने तरह-तरह क्राफ्ट बनाकर सभी को अपनी ओर आकर्षित किया। सेंटा क्लाज ने सभी बच्चों को उपहार बांटे तथा हाथ मिलाया बच्चे सेंटा क्लाज को देखकर बहुत खुश हुए इस मौके पर विद्यालय के डायरेक्टर संध्या सिंह ने सभी स्टाफ व बच्चों को क्रिसमस की शुभकामनाएं दी। विद्यालय के प्रधानाचार्य महेश कुमार ने ईसा मसीह के जीवनी पर प्रकाश डाला। इस मौके पर दीपक सिंह मौर्य ,प्रमोद कुमार कुशवाहा, राहिला नाज ,दिव्या ,मनोज कुमार ,वर्षा साहू ,ममता ,राम सिंह कुशवाहा ,मनोरमा सागर, टीपू सुल्तान ,सीतू त्रिपाठी ,सीएल जायसवाल ,बबलू सिंह, अरविंद यादव आदि लोग उपस्थित रहे।

बिजली कटौती से मुक्त हुआ उत्तर प्रदेश 24 घंटे बिजली देने का योगी सरकार ने किया ऐलान : संजय विधायक

कोखराज टोल प्लाजा पहुंचते ही जन विश्वास यात्रा का संजय गुप्ता विधायक के नेतृत्व में अपार भीड़ ने जोरदार तरीके से किया स्वागत

जन विश्वास यात्रा के माध्यम से योगी सरकार की योजनाओं का प्रचार करते चायल विधायक संजय गुप्ता साथ में सिराथू मंझनपुर विधायक

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के जन्म दिवस के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी द्वारा जन विश्वास यात्रा का आयोजन किया गया है जन विश्वास यात्रा के माध्यम से केंद्र और प्रदेश सरकार की विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी आम जनता तक पहुंचाना और आगामी विधानसभा चुनाव में आम जनता के विचारों को जानना जन विश्वास यात्रा का उद्देश्य है गोरखपुर से चलकर जन विश्वास यात्रा कोखराज टोल प्लाजा के जरिए भरवारी पहुंची है जहां चायल विधायक संजय गुप्ता के नेतृत्व में हजारो पार्टी पदाधिकारियों ने जोरदार तरीके से जन विश्वास यात्रा का स्वागत किया है जन विश्वास यात्रा के पहुंचते ही आम जनता में जोश भर गया और योगी मोदी जिंदाबाद के नारे से वातावरण गूंज उठा इस दौरान सिराथू विधायक शीतला प्रसाद पटेल मंझनपुर विधायक लाल बहादुर सांसद विनोद सोनकर जिला अध्यक्ष अनीता त्रिपाठी सहित हजारो लोग जन विश्वास यात्रा के आगमन पर एकत्रित हुए हैं और जोरदार पुष्प वर्षा कर जोरदार तरीके से स्वागत किया है केंद्र प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का यात्रा के माध्यम से आम जनता तक संदेश पहुंचाया है जन विश्वास यात्रा के दौरान योगी सरकार ने लोगों को भरोसा दिलाया है कि प्रदेश की जनता को 24 घंटे बिजली उपलब्ध कराई जाएगी और आज से उत्तर प्रदेश बिजली कटौती मुक्त होगा बिजली पासी के जन्म दिवस के अवसर पर भी बिजली पासी के योगदान पर चर्चा की गई कार्यक्रम के दौरान भाजपा जिला प्रभारी अनिल सिंह मंडल अध्यक्ष पार्टी कार्यकर्ता पदाधिकारी आम जनमानस सहित हजारों लोगों की भीड़ मौजूद रही।

जन विश्वास यात्रा का मूरतगंज तिराहे पर खल्लाबाद में पुरानी बाजार भरवारी के हनुमान निकेतन में और रेलवे फाटक तिराहा नई बाजार भरवारी में चायल विधायक संजय गुप्ता के नेतृत्व में हजारों भाजपा कार्यकताओं द्वारा फूल मालाओं से स्वागत किया गया जन विश्वास यात्रा के स्वागत में पूरे नगर में पुष्प वर्षा होती रही साथ ही इस मौके पर मौजूद लोगों ने कहा कि जब तक सूरज चाँद रहेगा अटल जी का नाम राहेगा योगी मोदी जिन्दाबाद के नारे से वातावरण गूंज उठा।

सीएम की सभा में पहुंचने की चायल विधायक ने की अपील

कौशाम्बी। जन विश्वास यात्रा के माध्यम से चायल विधायक संजय गुप्ता ने आम जनमानस से अपील की है कि 26 दिसंबर को दोपहर 12:00 बजे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंझनपुर मुख्यालय के डायट मैदान में एक विशाल जनसभा को संबोधित करेंगे इस दौरान वह सरकारी कार्यों का लोकार्पण भी करेंगे चायल विधायक ने आम जनमानस से अपील की है कि वह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विचारों को सुनने के लिए मंझनपुर की जनसभा में पहुंचे।

डिस्ट्रिक्ट रैपिड क्रिसमस स्पेशल शतरंज टूनार्मेंट का मनौरी में हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। जिला शतरंज स्पोर्ट्स एसोसिएशन के तत्वाधान में डिस्ट्रिक्ट रैपिड क्रिसमस स्पेशल शतरंज टूनार्मेंट का आयोजन मनौरी में किया गया जिसमें सर्वप्रथम सेक्रेटरी राघवेंद्र शुक्ला जी ने बच्चों को शतरंज के नियम बताएं उसके बाद टूनार्मेंट का आयोजन किया(यह टूनार्मेंट केवल 25 बच्चों के लिए किया गया) यह टूनार्मेंट बच्चों को शतरंज के नियम एवं खेले जाने का तरीका बताने के लिए किया गया था यह टूनार्मेंट महर्षि दयानंद बालिका इंटर कॉलेज मनौरी में स्थापित शौयल प्ले स्पोर्ट्स अकैडमी में किया गया अगला टैलेंट हंट इसी विद्यालय में बच्चों के प्रोत्साहन हेतु कराया जाएगा यह जानकारी सचिव राघवेंद्र शुक्ला ने दी । कौशाम्बी जिला शतरंज स्पोर्ट्स एसोसिएशन के तत्वाधान में प्रतियोगिता 4 चरण में की गई प्रतियोगिता के परिणाम में बालक वर्ग में पहला स्थान गौरव और दूसरे स्थान पर शिवांश केसरवानी रही तीसरा स्थान विनायक को मिला है बालिका वर्ग में पहला स्थान अंजलि दूसरे स्थान पर सृष्टि तीसरे स्थान नैंसी गुप्ता रही। कार्यक्रम में सचिव राघवेंद्र शुक्ला स्वधा द्विवेदी विघालय के मनीष केसरवानी मौजूद रहे सचिव ने बताया कि अंडर 20 डिस्टिक शतरंज टूनार्मेंट का चयन 26 दिसंबर को सरस्वती ज्ञान मंदिर जूनियर हाई स्कूल विजय चौराहा कौशांबी में होगा इसी के साथ उन्होंने बताया कि अगला टैलेंट हंट शनिवार 1 जनवरी को सरस्वती ज्ञान मंदिर सवरो करारी में आयोजित होगा।

प्रमाण पत्र दिखाते प्रतियोगिता में विजयी छात्र

किसान गरीब का बेटा हूं किसानों व मजदूरों का दर्द समझता हूं : जयहिंद

ग्रामीणों से जन संपर्क करते समर्थ किसान पार्टी प्रत्याशी सुशील जय हिंद

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जय जवान जय किसान मंच के संयोजक सुशील जय हिंद और संगठन के तमाम कार्यकताओं ने शनिवार को चायल तहसील क्षेत्र के बलीपुर टाटा नूरपुर सेवड़ा बेनी राम कटरा तिल्हापुर मोड़ सहित के दर्जन से अधिक गांव गांव जाकर जनता के बीच संवाद कायम किया इस मौके पर उपस्थित ग्रामीणों के बीच जय हिंद मंच के संयोजक सुशील जय हिंद ने कहा कि मैं किसान का बेटा हूं गरीब का बेटा हूं किसानों का मजदूरों का दर्द मैं समझता हूं उन्होंने कहा कि हम लगातार किसानों के लिए मजदूरों के लिए काम कर रहे हैं और करते रहेंगे इस मौके पर उपस्थित लोगों से सुशील जय हिंद ने कहा कि समर्थ किसान पार्टी से चायल विधानसभा के उम्मीदवार के रूप में मुझे आप लोगों के बीच में भेजा गया आप मेरा साथ दीजिए आप मेरे साथ चलिए मैं विश्वास के साथ वादा करता हूं की उम्मीद की कसौटी पर खरा उतरूंगा। इस मौके पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए किसान नेता संजय यादव ने कहा जो किसान हित की बात करेगा वही देश पर राज करेगा सुशील जय हिंद की टीम में किसान नेता संजय यादव सनी यादव लव कुश पंचम मनजीत शरद चंद्र राय बब्बू जैसे तमाम लोगों ने अपनी बात गांव की जनता के बीच रखी।

शौचालय निर्माण में एक करोड़ की रकम खर्च होने के बाद खुले में शौच कर रहे ग्रामीण

भइला ग्राम पंचायत में 777 शौचालय निर्माण के नाम पर निकाली गई रकम चढ़ी कमीशन खोरी की भेंट से नहीं लागू हो सकी योजना

कौशाम्बी। मंझनपुर विकासखंड क्षेत्र के ग्राम पंचायत भइला में शौचालय निर्माण योजना में जमकर धांधली हुई है शौचालय निर्माण के नाम पर करोड़ों की रकम बैंक खाते से निकाल ली गई है लेकिन ग्राम प्रधान के कमीशन खोरी के चलते शौचालय निर्माण की योजना इस गांव में पूरी तरह से फ्लॉप हो गई है पूरा गांव गंदगी से जूझ रहा है खुले में ग्रामीण शौच कर रहे हैं स्वच्छता अभियान की धज्जियां उड़ाई जा रही है लेकिन फिर भी ग्राम पंचायत में शौचालय निर्माण की धांधली पर अधिकारियों ने चुप्पी साध रखी है ग्रामीणों ने शौचालय निर्माण की धांधली की जांच कराए जाने की मांग योगी सरकार से की है। स्वच्छ भारत अभियान के तहत भइला ग्राम पंचायत में शौचालय निर्माण के नाम पर करोड़ों रुपये की रकम खर्च के बाद भी ग्राम पंचायत के लोग खुले में शौच करने को मजबूर हैं जिससे योगी सरकार का स्वच्छ भारत अभियान सफल नहीं हो सका है बताया जाता है कि शौचालय निर्माण की रकम लाभार्थियों के नाम से निकाल लिए जाने के बाद उन्हें रकम नहीं दी गई है बल्कि ग्राम प्रधान ने शौचालय का निर्माण खुद कराया है पूर्व के वर्षों में बनाए गए शौचालय में रंग रोगन कर उन्हें नया निर्माण दिखाने का भी भरसक प्रयास किया गया है शौचालय निर्माण में धांधली कर प्रधान मालामाल हो रहे हैं। ग्राम पंचायत में मनरेगा योजना के अंतर्गत भी बड़ी धांधली हुई है फर्जी मास्टर रोल भरकर मजदूरों के नाम भुगतान करा कर कमीशन खोरी हो रही है नाली खड़ंजा सीसी रोड निर्माण पर भी जमकर धांधली हुई है लेकिन ग्राम पंचायत भईला की धांधली की ओर आला अधिकारियों की नजर नहीं पहुंची है जिससे ग्राम पंचायत के भ्रष्टाचार में लिप्त लोग बेखौफ तरीके से कमीशन खोरी कर सरकारी योजनाओं को चपत लगा रहे हैं। ग्राम पंचायत भईला में 777 शौचालय निर्माण के मामले में 93 लाख रुपए से अधिक की रकम सरकारी खजाने से निकाले जाने के मामले में शासन स्तर से जांच हुई तो ग्राम प्रधान पर गाज गिरना तय है ग्रामीणों ने योगी सरकार से भइला ग्राम पंचायत की जांच करा कर शौचालय निर्माण में धांधली करने वाले ग्राम प्रधान पर कठोर कार्रवाई की मांग की है।

अवैध शराब के साथ तीन गिरफ्तार

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के निर्देश में जिले में चलाए जा रहे शराब के निर्माण एंव तस्करी के विरुद्ध 35 लीटर अवैध शराब के साथ तीन अभियुक्तो को गिरफ्तार कर न्यायालय भेज दिया ह।

जानकारी के मुताबिक थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा अभियुक्त प्रेम चन्द्र सरोज पुत्र होरी लाल निवासी नबीपुर थाना कोखराज को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

इसी प्रकार थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त पराने सरोज पुत्र कल्लन निवासी धवाड़ा थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब व चुंगे पुत्र स्व0 लल्लू निवासी पश्चिम शरीरा थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर कब्जे से 15 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

जनसंख्या फाउंडेशन अध्यक्ष ने अयोध्या पहुंचने की अपील की

अखंड भारत संदेश

अयोध्या पहुंचने की तैयारी में विचार विमर्श करते जन संख्या फाउंडेशन के जिला अध्यक्ष

कौशाम्बी। प्रदेश के सभी सम्मानित प्रदेश पदाधिकारी कार्यकारिणी सदस्य मंडल अध्यक्ष जिलाध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश में निवासरत समस्त जयएसएफ योद्धाओं को जनसंख्या समाधान फाउंडेशन के जिला अध्यक्ष राकेश चौधरी ने अवगत कराते हुए कहा है कि गाजीपुर में सपा के गुंडों द्वारा रथ यात्रा को बाधित करने का प्रयास किया गया था उन गुंडों के ऊपर मुकदमा लिखवा कर और मेडिकल कराने के बाद रथ यात्रा गाजीपुर से आजमगढ़ रात में रुकी और आगे अपने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार 28 दिसंबर को अयोध्या जी में समापन की ओर अग्रसर है उन्होंने कहा कि अयोध्या जी में हमारे मुख्य संरक्षक इंद्रेश कुमार और प्रदेश सरकार के मुख्य लोग उपस्थित रहेंगे अतः ऐसा सभी भाइयों और बहनों से अनुरोध है कि 28 दिसंबर से पहले पहले जिस किसी भी माध्यम से बस से ट्रेन से या अपनी गाड़ियों से वह अयोध्या पहुंच सकते हैं उन्होंने कहा कि आप सभी के रहने की व्यवस्था कारसेवक पुरम अयोध्या जी में कर दी गई है खाने पीने का उचित प्रबंध किया गया है उन्होंने कहा कि याद रहे यह रथयात्रा जनसंख्या नियंत्रण कानून बनवाने में महत्वपूर्ण साबित होगी जैसा रथ यात्रा पर पथराव लाठी-डंडों से हमला करने के बाद वातावरण बना है उस वजह से यह रथ यात्रा बहुत महत्वपूर्ण हो चुकी है आप सभी को समय से पहुंचने का विशेष अनुरोध है।

मनरेगा मजदूर की बैंक से निकल गई मजदूरी

कौशांबी। सिराथू तहसील क्षेत्र के अंबाई बुजुर्ग गांव निवासी हरिलाल पुत्र ननखुददा मनरेगा मजदूर है और उन्होंने अपने गांव में छोटेलाल के खेत में समतलीकरण का कार्य मनरेगा योजना में 12 दिन किया था उनकी 2088 रुपये मजदूरी बैंक खाते में 17 अप्रैल 2017 को आई थी जब वह बैंक पैसा निकालने गए तो मालूम चला उनके बैंक के खाते से रकम पहले ही निकाली जा चुकी है जिसकी शिकायत लेकर मजदूर भारतीय स्टेट बैंक सिराथू गया और प्रबंधक से शिकायत की लेकिन उसके खाते से बिना उसकी जानकारी के निकाली गई रकम को वापस करने के बजाय मैनेजर ने डांट कर भगा दिया मामले की शिकायत लेकर डिप्टी सीएम के पुत्र से भी मिला लेकिन उसके बाद भी उसे न्याय नहीं मिल सका हरिलाल मनरेगा मजदूर अपनी फरियाद लेकर अपर पुलिस अधीक्षक से मिला जिस पर उन्होंने मामले में मुकदमा दर्ज करने का निर्देश दिया लेकिन उसके बाद भी मामले का निस्तारण नहीं हो सका।

जनसंख्या समाधान फाउंडेशन ने धरना प्रदर्शन कर सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

प्रदर्शन करते जनसंख्या समाधान फाउंडेशन नेता

कौशाम्बी। जनसंख्या समाधान फाउंडेशन के जिला अध्यक्ष राकेश चौधरी के नेतृत्व में संगठन के दर्जनों लोगों ने जनपद मुख्यालय में धरना प्रदर्शन कर जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन सौंपा है जनसंख्या समाधान फाउंडेशन के जिला अध्यक्ष राकेश चौधरी ने कहा कि गाजियाबाद से शुरू हुई जनसंख्या नियंत्रण फाउंडेशन की रथयात्रा संपूर्ण उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों में भ्रमण पर निकली थी लेकिन जैसे ही फाउंडेशन की रथयात्रा गाजीपुर जनपद में पहुंची शरारती असामाजिक तत्वों ने संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल चौधरी सुधीर शर्मा सहित तमाम लोगों पर सुनियोजित तरीके से हमला कर दिया है जिससे रथ यात्रा का वाहन भी क्षतिग्रस्त हुआ है और संगठन के लोगों को गंभीर चोटें आई हैं में रथयात्रा में शामिल लोगों पर हमला करवाने वाले ओमप्रकाश सिंह को तत्काल गिरफ्तार कर कठोर दंड प्रदान करें सभी कार्यकताओं पर जानलेवा हमला करने का घोर अपराध ओमप्रकाश सिंह ने किया वह लोग देश का हित करने के बजाय अपराध को बढ़ावा दे रहे जबकि इस यात्रा का उद्देश्य सिर्फ जनसंख्या पर काबू कर महंगाई पर रोक लगे लेकिन इस तरह की दुष्ट प्रवृत्ति वाले लोगों को कतई न बख्शा जाए उन्होंने कहा कि अब आम जनता से अनुरोध है कि आप सभी जनसंख्या नियंत्रण पर ध्यान दीजिये जनसंख्या नियंत्रण कानून बनकर ही रहेगा कोई चाहे जितना भी उपद्रव कर ले।

सम्पादकीय

जम्मू-कश्मीर परिसीमन पर सवाल

जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद-370 और अनुच्छेद-35 ए की वापसी के साथ ही राज्य को दो हिस्सों में बांटने का फैसला 5 अगस्त, 2019 को मोदी सरकार ने लिया था। दावा था कि इससे राज्य में विकास के नए द्वार खुलेंगे, कश्मीरी पंडितों की घर वापसी होगी, आतंकवाद पर रोक लगेगी। लेकिन लगभग ढाई साल बाद भी इस अनूठे प्रदेश में हालात सामान्य नहीं हुए हैं। लद्दाख तो अलग हो ही गया, वहां की अपनी चिंताएं हैं। इसके अलावा जम्मू-कश्मीर में भी जनजीवन सामान्य नहीं हो पाया है। न आतंकवाद को खत्म किया जा सका, न कश्मीरी पंडितों की घर वापसी हुई और अब तो इस राज्य में पिछले दरवाजे से आकर विभाजनकारी खेल खेलने की कोशिश हो रही है। भाजपा परिसीमन के बहाने जम्मू-कश्मीर में अपना राजनैतिक एजेंडा यानी हिंदू बहुल वोटों को अपने पक्ष में करने के पैंतरे चल रही है, ऐसा आरोप विभिन्न राजनैतिक दल लगा रहे हैं। दरअसल इस सोमवार दिल्ली में परिसीमन आयोग की बैठक हुई। बैठक में जम्मू क्षेत्र में छह नई सीटें और कश्मीर घाटी के लिए एक नई सीट जोड़ने का प्रस्ताव रखा गया। प्रस्ताव के मुताबिक अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए कम से कम 16 सीटें आरक्षित रहेंगी। इस प्रस्ताव के अमल में आने के बाद 83 सीटों वाली जम्मू-कश्मीर विधानसभा में जम्मू क्षेत्र की सीटें 37 से बढ़कर 43 और कश्मीर घाटी की सीटें 46 से बढ़कर 47 हो जाएंगी। अनुसूचित जाति और जनजाति मुख्य रूप से जम्मू में हैं और इसका मतलब यह हुआ कि जम्मू को लगभग 60 सीटें मिलेंगी। इसके पूर्व जम्मू-कश्मीर विधानसभा में कुल 87 सीटें थीं जिनमें लद्दाख की चार सीटें शामिल थीं लेकिन अगस्त 2019 के पुनर्गठन विधेयक के बाद लद्दाख को अलग कर दिया गया था। गौरतलब है कि भारत में परिसीमन आयोग का गठन पहली बार 1952 में किया गया। यह आजादी के बाद का दौर था, कई भारतीय रियासतें खत्म हुई थीं और एक नए लोकतंत्र का भारत में उदय हुआ था। जिसमें सरकार के सामने यह चुनौती थी कि सभी जाति, धर्म, वर्ग और समुदायों की एक समान भागीदारी लोकतंत्र में रहे। अलग-अलग भौगोलिक इलाकों में रहने वाले नागरिकों को निर्वाचन की प्रक्रिया में बराबरी का हक मिले और उन्हें उचित प्रतिनिधित्व मिले, इस लिहाज से भी परिसीमन का खास महत्व है। इसलिए 1952 के बाद 1963, 1972 और फिर 2002 में परिसीमन आयोग बने। संविधान के अनुच्छेद-81 के अनुसार, लोकसभा के संयोजन में आबादी में होने वाले बदलाव नजर आने चाहिए। हालांकि 1976 में जो परिसीमन किया गया था, उसका आधार 1971 की जनगणना थी, और उस समय सीटों की संख्या कमोबेश पहले जैसी ही थी।

राज्य की सीटों की संख्या और आबादी का अनुपात सभी राज्यों में लगभग एक सा होना चाहिए। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि यह सुनिश्चित हो कि हर राज्य को एक बराबर प्रतिनिधित्व मिले। और 60 लाख से कम आबादी वाले छोटे राज्यों को इस नियम से छूट दी जाती है। हर राज्य और केंद्र शासित प्रदेश को कम से कम एक सीट आबंटित है, भले ही उसकी जनसंख्या कितनी भी हो। उदाहरण के लिए लक्षद्वीप की आबादी एक लाख से कम है लेकिन संसद में वहां से एक लोकसभा सांसद है। दक्षिण के राज्यों में आबादी नियंत्रित है, लेकिन ये सुनिश्चित करने के लिए कि उन्हें कम सीटें न मिलें, 2001 तक वहां परिसीमन का काम इस आधार पर रोक दिया गया कि देश में 2026 तक आबादी की एक समान वृद्धि दर हासिल कर ली जाएगी। लेकिन पिछले साल केंद्र सरकार ने खास जम्मू-कश्मीर के लिए परिसीमन आयोग का गठन किया और उसके बाद आयोग ने जम्मू और कश्मीर के तमाम राजनीतिक दलों के साथ बैठकें कीं। हालांकि नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस ने इस पूरी प्रक्रिया पर ही संदेह जताया था और इन बैठकों में भाजपा सरकार के अनुच्छेद-370 को रद्द करने का मुद्दा उठाया। नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस पार्टी ने सवाल उठाया था कि जब देश में निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन को साल 2026 तक के लिए रोक दिया गया तो जम्मू और कश्मीर में अभी ऐसा क्यों हो रहा है। वहीं पीडीपी ने तो परिसीमन आयोग के साथ बैठक में हिस्सा नहीं लिया था। महबूबा मुफ्ती का तर्क था कि केंद्र सरकार ने आम लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए कोई $कदम नहीं उठाया है। उन्होंने परिसीमन की प्रक्रिया के नतीजों को व्यापक तौर पर पहले से तय बताया था। परिसीमन से ऐतराज जताने वाले राजनीतिक दलों ने आशंका जताते हुए कहा है कि यह परिसीमन आयोग जम्मू-कश्मीर के मुस्लिम बहुमत के $खिलाफ काम करेगा और उन्हें राजनीतिक तौर पर अल्पसंख्यक में बदल देगा। पिछले साल पूर्व विदेश मंत्री यशवंत सिन्हा की अध्यक्षता में दिल्ली स्थित ग्रुप ऑफ कन्सर्न्ड सिटिजन्स ने परिसीमन आयोग को एक ज्ञापन सौंपा था। इसमें कहा गया कि 2011 में हुई जनगणना का संदर्भ लेते हुए परिसीमन किया जाना चाहिए। लेकिन ऐसा लग रहा है कि मोदी सरकार परिसीमन के उद्देश्यों की जगह अपने उद्देश्यों की पूर्ति में लगी है। कश्मीर के मुकाबले जम्मू की सीटें बढ़ाकर हिंदू बहुल आबादी का फायदा भाजपा अपने लिए उठाना चाहती है।

2022 के लिए कुछ आर्थिक प्राथमिकताएं

अजीत रानाडे

भारत सबसे बड़ी असमान अर्थव्यवस्था में से एक है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़ों पर आधारित नीति आयोग की हालिया रिपोर्ट बिहार, झारखंड तथा उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में उच्च बहुआयामी गरीबी दरों की भी पुष्टि करती है। वास्तव में नीति आयोग के मानदंडों में आय शामिल नहीं है और यह शिशु मृत्यु दर, परिसंपत्तियों के स्वामित्व और शिक्षा जैसे मानदंडों पर निर्भर करता है। नया साल जल्द ही आ रहा है। नव वर्ष के एक महीने के भीतर ही वित्त मंत्री बजट पेश करेंगे जिसमें अप्रैल 2022 में शुरू होने वाले अगले वित्त वर्ष के लिए उनकी खर्च प्राथमिकताओं को रेखांकित किया जाएगा। आर्थिक सर्वेक्षण के माध्यम से देश के आर्थिक प्रदर्शन पर हमें एक रिपोर्ट कार्ड भी मिलेगा। वास्तव में विभिन्न माध्यमों से हर पखवाड़े व महीने हमें आर्थिक स्थिति की जानकारी मिलती रहती है जिससे पता चलता है कि आर्थिक क्षेत्र में हम क्या और कैसे कुछ कर रहे हैं; और हमें वास्तव में साल के अंत में रिपोर्ट कार्ड के लिए इंतजार करने की जरूरत नहीं होती। इस लेख का उद्देश्य बजट पूर्व इच्छा सूची के बारे में लिखना नहीं है बल्कि आगामी वर्ष के लिए प्राथमिकताओं की पहचान करना है। नूतन साल के स्वागत के समय हमारी आर्थिक पृष्ठभूमि क्या है, इसके सकारात्मक पक्ष पर विचार करें तो विश्व अर्थव्यवस्था व्यावहारिक रूप से फल-फूल रही है। दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं यानी अमेरिका और चीन दोनों ही 5 प्रतिशत की दर से बढ़ रही हैं। अमेरिका में उच्च विकास के कारण कुछ ओवरहीटिंग हो रही है। अर्थव्यवस्था में ओवरहीटिंग के हालात तब बनते हैं जब वह मौजूदा संसाधनों से लगभग पूरी क्षमता के साथ तरक्की कर रही होती है लेकिन उसकी वृद्धि दर मांग पूरी करने के लिए पर्याप्त नहीं होती। मुद्रास्फीति की दर लगभग 7 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है जो पिछले चार दशकों में सबसे अधिक है। यह धन की अतिरिक्त आपूर्ति और अब श्रम व कौशल की कमी से बढ़ा है। विश्व अर्थव्यवस्था में उच्च वृद्धि के कारण भारत जैसे विकासशील देशों के लिए निर्यात के अवसर बढ़ने चाहिए। दरअसल भारत का माल निर्यात इस साल 400 अरब डॉलर को छू सकता है जो पिछले साल के मुकाबले करीब 40 फीसदी की छलांग है। अन्य सकारात्मक संकेतक अच्छा कर संग्रह है जो पिछले साल के बजट में निर्धारित लक्ष्य से बहुत आगे है, शेयर बाजार की उछाल, कंपनियों का उच्च मूल्यांकन, कॉर्पोरेट क्षेत्र में अच्छा मुनाफा (कम से कम बड़े कॉर्पोरेट में) एवं बैंकों की बैलेंस शीट में शुद्ध गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (यानी खराब ऋण-एनपीए) के कम अनुपात के रूप में हैं। नकारात्मक पक्ष में सबसे पहले ओमिक्रान के बारे में चिंता है। तीसरी लहर कितनी बड़ी होगी क्या यह शक्तिशाली होगी क्या इसके आने पर फिर लॉकडाउन करना पड़ेगा इस डर को आंशिक रूप से कम किया जा सकता है क्योंकि इस समय स्वास्थ्य क्षेत्र में बेहतर तैयारी है जिसमें ऑक्सीजन व बिस्तरों सहित टीका लगाए गए लोगों का एक बड़ा और बढ़ता हिस्सा है। सामूहिक प्रतिरक्षा का एक मिश्रित व उच्च स्तर है, मास्किंग जैसे प्रोटोकॉल का बेहतर अमल है, लॉकडाउन प्रतिबंधों के माइक्रो-मैनेजिंग की बेहतर समझ और अंत में शायद यह अनिच्छापूर्ण स्वीकृति है कि जीवन चलता ही जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त यह अनुमान है कि (शायद) कोविड-19 का यह वेरिएंट अत्यधिक संक्रामक है लेकिन उतना घातक नहीं है। बेशक इन तर्कों का मतलब यह नहीं है कि हम लापरवाही बरतें।

अन्य नकारात्मक पहलू अनौपचारिक अर्थव्यवस्था में, विशेष रूप से गहन संपर्क क्षेत्रों (जैसे सड़क किनारे विक्रेताओं, किराना दुकानों, मॉल श्रमिकों) में संकट हैं। जैसा कि राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के तहत काम की बढ़ी हुई मांग से प्रकट होता है कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था भी काफी दबाव में है। अपेक्षित बंपर फसल के बावजूद अनाज के दाम कम हैं इसलिए न्यूनतम समर्थन मूल्य बढ़ाने की मांग की जा रही है। इधर मुख्य रूप से खाद्य तेलों (मोटे तौर पर आयातित), दूध और पोल्ट्री जैसे प्रोटीन आइटम के कारण खाद्य मुद्रास्फीति बढ़ रही है। ग्रामीण बेरोजगारी दर बहुत ज्यादा है इसलिए राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना(एनआरईजीएस) के तहत रोजगार की मांग की जा रही है। उधर ग्रामीण मजदूरी में ठहराव आ रहा है। सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (सीएमआईई) और अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) के आंकड़े बताते हैं कि भारत की श्रम भागीदारी दर (एलपीआर) एशिया में सबसे कम, केवल 40 प्रतिशत है। यह 18 से 60 वर्ष आयु वर्ग के बीच के लोगों का अनुपात है जिनके पास नौकरी है या जो नौकरी की मांग कर रहे हैं। यहां तक कि बांग्लादेश में यह 53, पाकिस्तान में 48 और नेपाल में 74 फीसदी है। क्या भारत का कम अनुपात इस बात को उजागर कर रहा है कि श्रमिकों ने हतोत्साहित होकर नौकरी पाने की उम्मीदें भी छोड़ दी हैं समकक्ष देशों की तुलना में भारत की महिला श्रम भागीदारी दर 20 प्रतिशत है जो पहले से ही सबसे कम है और काफी समय से चिंता का कारण बनी हुई है।

असमानता में वृद्धि में मुद्रास्फीति तथा बेरोजगारी (और कम एलपीआर) का भी योगदान है। विश्व असमानता रिपोर्ट 2022 से पता चलता है कि शीर्ष 10 फीसदी के पास कुल राष्ट्रीय आय का 57 प्रतिशत हिस्सा है। इस शीर्ष में 1 प्रतिशत के पास राष्ट्रीय आय का 22 फीसदी हिस्सा है जबकि नीचे के आधे लोगों के पास सिर्फ 13 प्रतिशत हिस्सा है। इस वजह से भारत सबसे बड़ी असमान अर्थव्यवस्था में से एक है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़ों पर आधारित नीति आयोग की हालिया रिपोर्ट बिहार, झारखंड तथा उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में उच्च बहुआयामी गरीबी दरों की भी पुष्टि करती है। वास्तव में नीति आयोग के मानदंडों में आय शामिल नहीं है और यह शिशु मृत्यु दर, परिसंपत्तियों के स्वामित्व और शिक्षा जैसे मानदंडों पर निर्भर करता है। ओमिक्रान के अलावा मुद्रास्फीति, बेरोजगारी, गरीबी एवं असमानता सहित बैंकों से ऋ णों के उठाव की धीमी गति, निजी क्षेत्र से आने वाली बड़ी निवेश परियोजनाओं में भागीदारी के कम साक्ष्य और स्कूलों से छात्रों की निरंतर अनुपस्थिति जैसे चिंता के अन्य कारण हैं। स्कूली शिक्षा में दो साल के इस अंतराल का भारत के मानव पूंजी विकास पर दीर्घकालिक हानिकारक प्रभाव पड़ सकता है। सो, अगले साल की प्राथमिकताएं स्वयं ही स्पष्ट दिख रही हैं। सबसे पहले कठोर लॉकडाउन का उपयोग किए बिना या जनता को धोखे में रखे बिना ओमिक्रॉन के लिए तैयार होना है। टीकाकरण की प्रगति को कायम रखते हुए इसे और तेज किया जाना चाहिए। दूसरा, स्कूलों में रोटेशन के साथ कम से कम 50 प्रतिशत छात्रों की उपस्थिति निश्चित करना। राष्ट्रव्यापी पोर्टेबल प्रशिक्षु योजना सहित कौशल व प्रशिक्षण को सरकार समर्थित मान्यता के साथ तत्काल शुरू किया जाना चाहिए। यदि कॉरपोरेट क्षेत्र को प्रशिक्षुओं को स्थायी रूप से काम पर रखने के बोझ से मुक्त किया जाए तो वे उन्हें आसानी से रोजगार देंगे। तीसरा, राष्ट्रीय आधारभूत संरचना की परियोजनाओं का निष्पादन शीघ्र शुरू हो। इन पर काम शुरू होगा तो सालाना 20 लाख करोड़ के करीब खर्च होगा जिसका नौकरियों के साथ-साथ सहायक और विक्रेता उद्योगों पर गुणक प्रभाव पड़ सकता है। चौथा, निरंतर निर्यात वृद्धि के लिए समर्थन सुनिश्चित करना। जीएसटी की जीरो रेटिंग वांछनीय है। कृषि निर्यात पर प्रतिबंध न लगाया जाए। वर्तमान में 13 क्षेत्रों पर लागू उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना की सफलता सुनिश्चित करने के साथ उसका निर्यात सहायता के साथ सामंजस्य भी स्थापित करना चाहिए। भारत को बांग्लादेश से सीखना चाहिए जो एक दशक से अधिक समय से वस्त्र और कपड़ों के निर्यात पर लगातार ध्यान देने के साथ प्रति व्यक्ति आय के मामले में भारत से आगे निकल गया है। पांचवा, टैक्स के बोझ को तर्कसंगत बनाना है। जीएसटी जैसे अप्रत्यक्ष करों से अमीरों से कहीं ज्यादा गरीब प्रभावित होते हैं। कुल करों में प्रत्यक्ष करों का हिस्सा घटने के कारण हम पिछड़ गए हैं। इसे उलटना होगा, यानी करों में प्रत्यक्ष करों की हिस्सेदारी बढ़ानी होगी। ऐसा करने से बढ़ती असमानता पर भी रोक लगेगी। उम्मीद है कि हम अगले साल अर्थव्यवस्था को बढ़ता हुआ देखेंगे। एक बार व्यापार और उपभोक्ता का भरोसा मिलने पर निजी निवेश में वृद्धि होगी ही। इसके लिए उपरोक्त नीतिगत आवश्यकताओं में से कुछ को लागू करना होगा और इसके लिए केन्द्र और राज्य सरकारों दोनों की ओर से कार्रवाई की आवश्यकता है। हम सभी पाठकों को एक सुरक्षित, स्वस्थ और समृद्ध 2022 की बधाई दे रहे हैं।

बाजार में बिकती सुन्दरता

चैतन्य नागर

सौंदर्य प्रदर्शन के लिए प्रतियोगिताएं हो रही हैं और ऐसा भ्रम पैदा किया जा रहा है कि सिर्फ बाहरी सौंदर्य की बात नहीं हो रही, आंतरिक, बौद्धिक और भावनात्मक सौन्दर्य की भी बात हो रही है। इसलिए कुछ बुद्धिजीवी टाइप लोग इनमें जज बन जाते हैं। ये लोग इन सुंदरियों से कुछ सवाल भी पूछते हैं, यह साबित करने के लिए कि ऐसा नहीं है कि इन्होंने अपना सारा वक्त और उर्जा बस अपनी त्वचा को चमकाने में ही लगाया है। कुल मिलाकर पूर्ण सौंदर्य का एक बेवकूफी से भरा मिथक निर्मित किया गया है। इक्कीस साल बाद मिस यूनिवर्स - 2021 का खिताब भारत की हरनाज कौर सिन्धु ने जीता है। इससे पहले लारा दत्ता ने 2000 में यह खिताब जीता था। प्रतियोगिता का आयोजन इजरायल में हुआ था और अलग-अलग देशों की 80 युवतियों ने इसमें हिस्सा लिया था। इसका एक अजीब पहलू यह भी है कि सौन्दर्य जैसा सहज, सरल कुछ देखने के लिए हमें विशेषज्ञों के प्रमाण-पत्र वगैरह की जरूरत पड़ती है। स्त्री देह के सौंदर्य को लेकर हम इतने मनोग्रहीत हैं कि हमें पेड़-पौधों, नदियों, परिंदों और जीव-जंतुओं में कोई प्राकृतिक सौंदर्य दिखता ही नहीं है। सीधी सी बात है, अरबों डॉलर के प्रसाधन उद्योग ने स्त्री को देह और देह को भोग की चीज में तब्दील कर दिया है और सौन्दर्य को स्त्री और उसकी देह तक सीमित कर दिया है। स्त्री सौन्दर्य को लेकर बड़ी विरोधाभासी सोच समाज में प्रचलित है। कहीं स्त्री को मात्र देह की तरह देखने का आग्रह और परंपरा है और कहीं प्रगतिशील बनने की चाह भी है, जो कहती है स्त्री मात्र शरीर नहीं। ऐसा नहीं है कि स्त्री देह में सौंदर्य नहीं, पर सौंदर्य वहीं तक सीमित नहीं है। उसकी देह के प्रति आवश्यकता से अधिक आकर्षण, हर चीज के विज्ञापन में उसकी देह के उपयोग से एक ऐसा माहौल तैयार हुआ है जिसमें हमने और कहीं सौंदर्य देखना ही छोड़ दिया है। स्त्री के सौंदर्य के साथ भोग की और सुख की एक दैहिक / भावनात्मक / जैविक आवश्यकता जुड़ जाने की वजह से बाजार ने उसका खुलकर उपयोग किया है। सुन्दर दिखना, दूसरों की तुलना में ज्यादा आकर्षक दिखना और खुद को समाज में सौंदर्य के बारे में प्रचलित धारणाओं के हिसाब से ढालना, यह बड़ी आम बात है। पक्षियों के पंख और चमकते पत्थरों से खुद को सजाने की गुफा में रहने वाले हमारे पूर्वजों की प्रवृत्ति से लेकर अति-आधुनिक नामधारी आभूषणों और कपड़ों की तड़प के भीतर तक एक ही मनोदशा काम करती आई है।

वरिष्ठ पत्रकार और संपादक नीरेंद्र पूछते हैं कि शारीरिक सुंदरता है क्या उनका कहना है कि यह अनजाने में माता-पिता से मिला एक उपहार ही तो है, एक ऐसी चीज जिसके बारे में माता-पिता भी पहले से निश्चित नहीं होते। पीढ़ियों से संप्रेषित हो रहे लाखों-करोड़ों जींस में से कौन से जींस मिलकर एक अनूठा कॉम्बिनेशन बनाएंगे कि एक खूबसूरत शक्ल निकल आएगी, किसको पता है और अगर पता भी हो तो भी क्या अगर माता-पिता दोनों ही खूबसूरत हों और यह तय हो कि उनकी कोशिकाओं में खूबसूरती पैदा करने वाले ही जींस हैं तो भी क्या! उनके इन जींस की वजह से सुंदर पैदा हुई उस संतान को इसी वजह से जिंदगी भर तारीफ क्यों मिले इसमें उसका क्या निजी योगदान है, कैसी मेहनत है, कौन सी प्रतिभा है जिस तरह चांद की खूबसूरती सूरज की रोशनी की मोहताज है, उसी तरह किसी भी खूबसूरत चेहरे के लिए उसके माता-पिता से मिले जींस जिम्मेदार हैं। स्त्री के सौंदर्य का मिथक बहुत गहरा और पुराना है। इस मिथक पर पूरी दुनिया का करीब 30 अरब डॉलर का प्रसाधन उद्योग टिका हुआ है। आप बूढ़े न दिखें इसके लिए हजारों वैज्ञानिक आपकी झुर्रियां छिपाने में लगे हैं। हमारी त्वचा पर लगने वाली क्रीम हमें नुकसान न पहुंचाए इसके लिए छोटे-छोटे निरीह पशुओं पर उनका परीक्षण किया जा रहा है, उन्हें मारा जा रहा है। स्त्री को सुन्दर दिखाना, उसे सौंदर्य के प्रतीक के रूप में सामने रखना, उसे भोग के एक साधन के रूप में देखना, क्योंकि उस पर अरबों रुपये खर्च किये जा रहे हैं, यह पूंजीवाद द्वारा पोषित एक बहुत बड़ा मिथक बन चुका है।

सौंदर्य प्रदर्शन के लिए प्रतियोगिताएं हो रही हैं और ऐसा भ्रम पैदा किया जा रहा है कि सिर्फ बाहरी सौंदर्य की बात नहीं हो रही, आंतरिक, बौद्धिक और भावनात्मक सौन्दर्य की भी बात हो रही है। इसलिए कुछ बुद्धिजीवी टाइप लोग इनमें जज बन जाते हैं। ये लोग इन सुंदरियों से कुछ सवाल भी पूछते हैं, यह साबित करने के लिए कि ऐसा नहीं है कि इन्होंने अपना सारा वक्त और उर्जा बस अपनी त्वचा को चमकाने में ही लगाया है। कुल मिलाकर पूर्ण सौंदर्य का एक बेवकूफी से भरा मिथक निर्मित किया गया है और करोड़ों की तादाद में स्त्रियों को भरमाया जा रहा है। साथ ही पुरुषों को भी, हालांकि वे तो पहले से ही इस मामले में भ्रमित चल रहे हैं! जब हम सौंदर्य की बात करते हैं तो क्या चमड़ी के चिकनेपन, बालों की चमक, उभारों के सही नाप-जोख और उसकी सही जगह की ही बात करते हैं यदि आपतथाकथित रूप से सुन्दर या असुंदर पैदा हुए हैं, पैसे वाले हैं और सही ढंग से अपना रख-रखाव करने के गुर सीख लिए हैं तो आप सुन्दर हैं आप विपरीत सेक्स वालों के अंदर एक हलचल और एक उत्तेजना पैदा करते हैं, एक कुंठा पैदा कर दें तो आप बड़े सुंदर इंसान हैं, ऐसा मान लिया जाए या फिर सौंदर्य में कुछ ऐसी चीजें भी शामिल होनी चाहिए जिसे मापा-तौला नहीं जा सकता। उदाहरण के लिए आपकी संवेदनशीलता, कुदरत के साथ आपका रिश्ता, बच्चों की परवरिश के बारे में आपके ख्याल, बढ़ती हिंसा के बारे में आपके विचार वगैरह-वगैरह। मिस यूनिवर्स सुन्दर हैं, पर खेतों में दिन-रात खटने वाली, अपने बच्चे को घर पर छोड़कर मेहनत से चार पैसे कमाने वाली क्या सुन्दर नहीं है क्या सड़क पर उतरकर आम लोगों के सवालों को लेकर लड़ने वाली मेधा पाटकर या बरसों अनशन पर बैठी इरोम शर्मिला सुन्दर नहीं हैं एक सड़े-गले समाज में थोड़ी-बहुत समझ पैदा करने की कोशिश करने वाले लोग एक अलग पर बहुत गहरे अर्थ में सुन्दर हैं। स्त्री सौंदर्य की पूरी अवधारणा पश्चिमी भौतिकवाद, पूंजीवाद और जड़वाद की उपज है, जिसके पीछे खरीद-फरोख्त, झूठी उत्तेजना और एक क्रूर संस्कृति, खोखले रिश्तों की सच्चाई छिपी हुई है। सौंदर्य का पूरा विचार ही गलत हो गया है, सिर्फ शारीरिक सुंदरता तक सीमित रह गया है। काशी में हूं और ठीक सामने है, मणिकर्णिका जहां कुछ समय पहले तक सुन्दर रही कई देहें राख में तब्दील हो रही हैं। बेवकूफी इस बात में है कि इंसान खुद को इस पूरी सृष्टि का केंद्र मानता है। आप किसी चिड़िया को देखें गौर से, किसी दरख्तब को देखें, उसकी एक-एक पत्ती को देखें। उसकी गरिमा, उसकी विनम्रता, उसकी नश्वरता को देखें, उसके मौन को छुएं, इंसान का अहंकार से भरा सौंदर्य उसके सामने कुछ नहीं। वह सिर्फ बाजारू चीज बनकर रह गया है, प्रसाधन उद्योग चलाने का एक माध्यम, झूठी उत्तेजना पैदा करने का एक तरीका, दूसरे लोगों को अ-सुन्दर कहने का एक बहाना। हम उनका सौंदर्य भी देखें जो एक भ्रष्ट सिस्टम में बरसों तक पढ़-लिखकर भी दो वक्त की रोटी का जुगाड़ नहीं कर पा रहे, उनका सौंदर्य देखिये जिन्हें कभी आइना देखने का समय भी नहीं मिलता।

वे सामान्य अर्थ में इसलिए सुन्दर नहीं बन पा रहीं, क्योंकि चंद धन-पशु इंसानों ने बाकी चीजों की तरह सौंदर्य को भी एक चीज में तब्दील कर दिया है जिसे केमिकल्स और जिम की मशीनों से खरीदा और बेचा जा सकता है। कभी हो सके तो हम धरती के दुःख का अनुभव करें। यह दुःख सर्दी-गर्मी से बेहाल गरीबों का है, उस दुनिया का जिसकी आधी दौलत सिर्फ कुछ लोगों के पास है; दुःख उस दुनिया का जहां सिर्फ एक साल शस्त्र न बनाये जाएं तो हर इंसान के पास रोटी कपड़ा और मकान होगा; उस दुनिया का जहां अनाज की करोड़ों बोरियां फूंक दी जाती हैं और बड़ी तादाद में लोग भूखे मरते हैं। यह दुःख उन बच्चों का है जिन्हें ऐसी शिक्षा मिलती है जो उनके किसी काम की नहीं होती। उन्हें ऐसे काम करने पड़ते हैं जिसमें उनकी कोई दिलचस्पी नहीं। जहां पशुओं को सिर्फ स्वाद के लिए बेरहमी से कत्ल कर दिया जाता है। इन दुखों को देखने वाली संवेदनशीलता में वास्तविक सौन्दर्य है। असली सौंदर्य तो है खुद से और साधन संपन्न लोगों से इन सवालों को पूछने में। इनसे बच कर कोई कैसे सुन्दर हो सकता है और खुद को सुन्दर मान सकता है

विवाह कानून को बदलने की सुखद कवायद

सुरेन्द्र कुमार

हाल ही मे मोदी कैबिनेट ने लडकियों के लिए विवाह की न्युनतम आयु 21वर्ष करने का निर्णायक फैसला लिया है। केंद्र सरकार के इस ऐतिहासिक फैसले से देश की बेटियां खासी उत्साहित हुई है तथा उम्मीद जता रही है कि सरकार विवाह कानून संशोधन विधेयक इसी सत्र मे पेश करके उन्हें गौरवान्वित करेगी। जबकि दूसरी ओर सरकार भी इन दिनों विवाह कानून मे बदलाव के लिए कड़ी जद्दोजहद कर रही है। यदि सरकार संसद मे इस ऐतिहासिक विधेयक को पारित करने मे कामयाब रहती है तो देश के विवाह कानून मे होने वाला यह संशोधन क्रांतिकारी माना जाएगा। इसके प्रभाव से देशवासियों को विशेष रूप से नौजवान युवतियों को सुखद अहसास की अनुभूति होगी। शादी की उम्र को एक समान करने की घोषणा पीएम मोदी ने 15 अगस्त 2020 को लाल किले की प्राचीर से की थी। जबकि इस पर कार्य करना सरकार ने इससे भी पूर्व मे ही शुरू कर दिया था। केंद्र सरकार ने शादी की उम्र पर व्यापक विचार विमर्श करने के उद्देश्य से जून 2020 मे सांसद जया जेटली की अगुवाई मे दस सदस्यीय टास्क फोर्स गठित की थी। देश मे लडकियों की शादी की उम्र को लेकर लंबे समय से गतिरोध चल रहा है। दिल्ली हाईकोर्ट मे भी इस बहस को लेकर एक याचिका दायर की गई थी । इसलिए सरकार ने टास्क फोर्स को अति शीघ्र कारवाई करके रिपोर्ट तैयार करने को कहा था। फोर्स ने कम समय मे अधिक मेहनत करके गत वर्ष दिसंबर माह मे ही अपनी रिपोर्ट तैयार कर दी थी। फोर्स ने विवाह की उम्र को लेकर राजस्थान के सूदूर इलाकों की महिलाओं से लेकर नामी विश्वविद्यालयों की लडकियों से और हाशिये मे खडी. समुदायिक महिलाओं से लेकर शहर की शिक्षित लडकियों तक से विचार विमर्श करके अपनी रिपोर्ट तैयार की।

और सर्वसम्मति से देश की नौजवान युवतियों के लिए भी शादी की उम्र को लडकों के समान न्युनतम 21 वर्ष करने का प्रस्ताव तैयार किया। जिस पर सरकार ने गहनता से विचार विमर्श किया और गत सप्ताह प्रस्ताव को कैबिनेट मे पारित करके एक क्रांतिकारी बदलाव पर अपनी मोहर लगाई। यह कहना भी तर्क संगत नहीं होगा कि देश मे अबतक विवाह कानून मे बदलाव नहीं हुएं हैं। देश मे सर्वप्रथम वर्ष 1929 मे शारदा एक्ट के तहत विवाह की उम्र न्युनतम 15 वर्ष निर्धारित की थी। जिसे लगभग पांच दशक तक अपनाया गया। वर्ष 1978 मे इसमें संशोधन करके देशवासियों के लिए शादी की आयु न्युनतम 18 वर्ष की गई। और आज तक हम इसी कानून के तहत शादी कर रहे हैं। हालांकि वर्ष 2006 मे सरकार ने इसमें बाल विवाह निषेध कानून को जोड़ा था। अब दिसम्बर 2021 मे पुनः एक लंबे अरसे के उपरांत विवाह कानून मे संशोधन करने की कवायद शुरू हुई है। यदि सरकार संसद मे देश के विवाह कानून मे संशोधन विधेयक को पारित करने मे सफल रहती है तो यह वर्तमान सरकार का दूसरा बड़ा वैवाहिक सुधार माना जाएगा।

इससे पूर्व भी मोदी सरकार ने एनआरआई मैरिज को 30 दिन के अंदर पंजीकृत करने का महत्वपूर्ण फैसला लिया था। जिसकी मांग देशवासी दशकों से कर रहे थे। विधेयक के पारित होने पर सरकार बाल विवाह निषेध कानून-2006 मे संशोधन करने के साथ साथ सरकार इंडियन क्रिश्चियन मैरिज एक्ट 1872, पारसी मैरिज एवं डिवोर्स एक्ट 1936, स्पेशल मैरिज एक्ट 1954 और हिंदू मैरिज एक्ट 1955 के नियमों मे भी परिवर्तन कर सकेगी। भारत मे विवाह कानून से संबंधित आंकड़े आज आजादी के सात दशक बीत जाने के उपरांत भी सहज नहीं है। आंकड़ों को देखकर ताज्जुब होता है कि भारत मे आज भी विवाह संबंधित अनेकों भ्रांतियां विद्यमान है। यहाँ आज भी बेटियों की बढ़ती उम्र अभिभावकों के लिए बोझ सी प्रतीत होती है। अभिभावकों का एक बड़ा हिस्सा आज भी लडकियों की शिक्षा के खिलाफ है। उन्हें आज भी पुष्प सी मुस्कराती बिटिया एक उपभोग वस्तु प्रतीत होती है। इसके अलावा यह भी देश की विडम्बना है कि यहाँ कड़े विवाह कानून की मौजूदगी के चलते भी बाल विवाह जैसी घिनौनी घटनाएं घट जाती है। प्रशासन के अनेकों प्रावधानों के बावजूद भी यहाँ वर्ष मे हजारों बाल विवाह होतें हैं। इसके लिए जिम्मेदार कारक चाहे जो भी हो परंतु अज्ञानता और गरीब आज भी हमारी वैवाहिक संरचना को पंगु बनाने पर तुले है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे-5 के अनुसार देश मे 18 साल से पहले लडकियों की शादी करने की दर जहाँ वर्ष 2015-17 के दौरान लगभग 27 फीसदी थी वही वर्ष 2019-21 के दौरान इसमें आंशिक सुधार के साथ दर लगभग 23 फीसदी तक घटी है। जो हर दृष्टि से नाकाफी है। ऑक्सफेम इंडिया के जेंडर जस्टिस विशेषज्ञ अमिता पितेर का मानना है कि भारत मे अभी भी लगभग 50 से 60 फीसदी शादियां 21 वर्ष की उम्र से पूर्व हो जाती है। यह बात आज भी हम सबको झकझोर रही है। इसी तरह यूनिसेफ के मुताबिक भारत मे हर साल 15 लाख लडकियों की शादी 18 वर्ष से कम उम्र मे हो जाती है। इतना ही नहीं जनगणना महापंजीयक के आंकड़ों के अनुसार देश मे 18 से 21 वर्ष के बीच शादी करने वाली युवतियों की संख्या करीब 16 करोड़ है। ऐसे मे हम समझ सकते हैं कि देश मे विवाह कानून मे संशोधन कितना जरूरी है। यदि सरकार देश के विवाह कानून मे बदलाव करने मे सफल रहती है तो इससे भारत को अनेकों फायदों हासिल हो सकतें हैं। देश मे शादी के ग्राफ मे भारी गिरावट आने से देशवासियों को अनेकों सहुलियतें हासिल हो सकती है। विवाह मे देरी का देश के परिवारों, महिलाओं, बच्चों और समाज के आर्थिक, सामाजिक और स्वास्थ्य पर कारगर असर दिखाई देगा। इसी प्रकार विवाह कानून संशोधन विधेयक पारित होने से देश मे जेंडर जस्टिस को बढ़ावा मिलेगा, लडकियों को पढने लिखने व फलने फुलने को समान अवसर मिलेगें, बेटियों को कुपोषण से निजात मिलेगी। विवाह कानून मे बदलाव से महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलेगा, जनसंख्या नियंत्रण को बढ़ावा मिलेगा, राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा तथा साथ ही ग्रामीण व शहरी युवतियों मे समानता का भाव और विभिन्न समुदाय के लोगों मे एकरूपता की भावना जागृत होगी।

दक्षिण अफ्रीका का 'अभेद्य किला' भेदने उतरेगी टीम इंडिया

सेंचुरियन। ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड में सीरीज जीतने वाली भारतीय क्रिकेट टीम शनिवार से सेंचुरियन के सुपरस्पोर्ट पार्क स्टेडियम में होने वाले पहले टेस्ट मैच में दक्षिण अफ्रीका का 'अभेद्य किला' भेदने के इरादे से मैदान पर उतरेगी। भारतीय टीम दक्षिण अफ्रीका दौरे पर पहली बार कोई टेस्ट सीरीज जीतना चाहेगी। हालांकि दक्षिण अफ्रीका का हालिया घरेलू रिकॉर्ड भी बेहतर नहीं रहा है और उन्होंने अपने पिछले आठ घरेलू टेस्ट में से पांच गंवाए हैं। इस दौरान तीन घरेलू टेस्ट सीरीज में दो में उन्हें हार मिली है। यह रिकॉर्ड टीम इंडिया को दक्षिण अफ्रीका में अपनी पहली टेस्ट सीरीज जीतने के लिए प्रेरित करेगा। पहला मैच सेंचुरियन में खेला जाएगा, जो मेजबान टीम का किला भी माना जाता है। इस मैदान पर 26 टेस्ट मैच हुए हैं, जिसमें से दक्षिण अफ्रीका ने केवल दो ही गंवाए हैं, जबकि 21 में उन्हें जीत मिली है। इन दोनों मैचों में से एक मैच वह है, जब खराब मौसम के कारण बहुत सारा समय बर्बाद हो जाने के बाद इंग्लैंड और साउथ अफ्रीका ने एक-एक पारी का मैच खेला था। भारत ने यहां पर 2010 और 2018 में दो टेस्ट मैच खेले हैं और दोनों में उन्हें हार का सामना करना पड़ा है। पिछले साल विदेशी दौरों पर भी भारत के सलामी बल्लेबाजों ने कुछ निरंतरता दिखाई लेकिन विराट कोहली, अजिंक्य रहाणे और चेतेश्वर पुजारा का अनुभवी मध्य क्रम रनों की कमी से जूझता रहा। तीनों ने दो-दो बार साउथ अफ्रीका का दौरा किया है और तीनों का रिकॉर्ड बहुत अच्छा रहा है। कोहली और रहाणे ने तो यहां पर 50 अधिक के औसत से रन किए हैं, जबकि पुजारा ने भी कुछ महत्वपूर्ण पारियां खेली हैं। हालांकि पिछले दो वर्षों में इन तीनों बल्लेबाजों का प्रदर्शन गिरा है और औसत 30 से भी कम का हो गया है। इस साल केवल श्रेयस अय्यर ही एक ऐसे भारतीय बल्लेबाज रहे हैं, जिन्होंने नंबर तीन से नंबर पांच पर आते हुए शतक लगाया है।

पुजारा के नाम पिछले 42 पारियों में शतक नहीं है। वहीं कप्तान कोहली ने नवंबर 2019 के बाद से कोई शतक नहीं लगाया है। वहीं रहाणे के नाम 16 टेस्ट में सिर्फ तीन 50+ के स्कोर हैं। 2016 तक 29 टेस्ट खेलने के बाद रहाणे का औसत पहली और एकमात्र बार 50 से अधिक 51.37 तक गया था। इसके बाद से उन्होंने 50 से अधिक टेस्ट खेला है और उनका औसत 32.73 तक आ गया है। पिछले साल मेलबॉर्न में मैच जिताऊ शतक के बाद उन्होंने 22 पारियों में सिर्फ दो अर्धशतक लगाए हैं। लगातार शीर्ष छह में 50 टेस्ट खेलते हुए इससे कम औसत सिर्फ रवि शास्त्री (32.38) का रहा है।भारत के लिए सबसे बड़ी चिंता मध्य क्रम है, जिसमें उसे रहाणे, हनुमा विहारी और अय्यर में से किसी एक को चुनना है। रहाणे का समर्थन हालांकि टीम में सभी कर रहे हैं लेकिन घरेलू सीरीज में न्यूजीलैंड के खिलाफ उनके बल्ले ने जैसी खामोशी दिखाई है उसे देखते हुए उन्हें चुनना मुश्किल लगता है लेकिन अंतिम समय तक क्या कुछ बदल जाए कुछ कहना मुश्किल लगता है।

भारत ने पाकिस्तान के सामने रखा 238 रन का लक्ष्य, आराध्य यादव ने जड़ी फिफ्टी

नईदिल्ली। भारत ने अंडर-19 एशिया कप मैच में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान के सामने जीतने के लिए 238 रनों का लक्ष्य रखा है। पाकिस्तान ने भारत को 49 ओवर में 237 रनों पर समेट दिया। भारत की तरफ से आराध्य यादव ने सर्वाधिक 50 रन बनाए। उनके अलावा ओपनर बल्लेबाज हरनूर सिंह ने 46 रनों का योगदान दिया। पाकिस्तान की तरफ से सैयद जीशान जमीर ने सर्वाधिक पांच विकेट लिए।

पाकिस्तान ने टॉस जीतकर भारत को पहले बल्लेबाजी करने का न्योता दिया। भारत की शुरूआत बेहद खराब रही। टीम ने महज 96 रनों के स्कोर पर अपने 5 विकेट गंवा दिए थे। पिछले मैच के हीरो हरनूर सिंह को छोड़ कर भारत का टॉप ऑर्डर और मिडिल ऑर्डर पूरी तरफ विफल रहा। इसके बाद कौशल तांबे और आराध्य के बीच अर्धशतकीय साझेदारी हुई। कौशल तांबे ने 32 रन बनाए। उनके अलावा राजवर्धन हनगरगेकर ने अंतिम ओवरों में ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए 20 गेंद में 30 रन बनाए।

भारत ने अंडर 19 एशिया कप में अपने अभियान की शुरूआत जीत के साथ की थी। भारत ने गुरुवार को संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) को 154 रनों से मात दी थी। भारत ने इस मैच में पहले बल्लेबाजी करते हुए हरनूर के शतक और कप्तान यश धुल के अर्धशतक की बदौलत निर्धारित 50 ओवर में पांच विकेट खो कर 282 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर बनाया था। 283 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए उसने यूएई को 34.3 ओवर में 128 रन पर ऑलआउट कर दिया।

व्हाइट बॉल कप्तानी विवाद पर राहुल द्रविड़ ने चुप्पी तोड़ी

नई दिल्ली। भारत और साउथ अफ्रीका के बीच पहला टेस्ट 26 दिसंबर से सेंचुरियन में खेला जाएगा। टेस्ट सीरीज के शुरू होने से एक दिन पहले टीम इंडिया के हेड कोच राहुल द्रविड़ ने मीडिया से बात की। राहुल द्रविड़ ने वर्चुअल प्रेस कॉन्फ्रेंस में राहुल द्रविड़ ने विराट कोहली कप्तानी विवाद पर अपनी चुप्पी तोड़ी। व्हाइट बॉल टीम की कप्तानी को लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में उन्होंने कहा,' ईमानदारी से कहूं तो ये सिलेक्टर्स का काम है। उनसे मेरी क्या बातचीत हुई या नहीं हुई, मैं उसके बारे में कुछ नहीं बोलूंगा। यह उसका समय और स्थान नहीं है । वैसे भी मेरी जो भी बातचीत हुई है वह मीडिया तक तो नहीं आने वाली। मैं किसी को नहीं बताऊंगा कि क्या बात हुई है। द्रविड़ ने टीम इंडिया के टेस्ट कप्तान विराट कोहली की जमकर तारीफ की। उन्होंने कहा कि एक लीडर के रूप में विराट ने बेहतरीन भूमिका निभाई है और उम्मीद है कि आगामी सीरीज भी उनके लिए शानदार रहेगी।

टीम इंडिया के हेड कोच राहुल द्रविड़ ने बताया, कई बार खिलाड़ियों से संवाद करना क्यों होता है कठिन

नई दिल्ली। टीम इंडिया के हेड कोच राहुल द्रविड़ ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले टेस्ट के लिए प्लेइंग इलेवन को लेकर कोई संकेत नहीं दिए लेकिन कहा कि टीम में जगह को लेकर 'कठिन संवाद' की बात आती है तो भारतीय खिलाड़ी काफी पेशेवर हैं। दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ 'बॉक्सिंग डे' टेस्ट से पहले द्रविड़ ने कहा कि अगर टीम में नहीं चुने जाने पर खिलाड़ी मायूस होते हैं तो यह अच्छी बात है क्योंकि इसके मायने हैं कि उन्हें परवाह है और खेलने की ललक भी। उनसे पूछा गया था कि ईशांत शर्मा और अजिंक्य रहाणे जैसे सीनियर खिलाड़ियों से उनकी क्या बात हुई जिन्हें पहले टेस्ट से बाहर रखा जा सकता है । उन्होंने कहा ,'अधिकांश खिलाड़ी काफी पेशेवर हैं। कई बार खिलाड़ियों से कठिन संवाद करने पड़ते हैं मसलन किसी खिलाड़ी को यह कहना कि वह नहीं खेल रहा है। यह काफी कठिन होता है क्योंकि हर कोई खेलना चाहता है।' उन्होंने कहा कि अधिकांश सीनियर खिलाड़ियों ने किसी स्तर पर खुद कठिन फैसले लिए हैं, शायद फर्स्ट क्लास टीम की कप्तानी के

समय या नेतृत्व दल के हिस्से के रूप में। वे हालात को समझते हैं क्योंकि वे ऐसे हालात से गुजर चुके हैं। कुछ अपने प्रदेश की टीमों के सीनियर सदस्य रहे हैं या नेतृत्व दल का हिस्सा रहे हैं जब उन्हें भी ऐसा करना पड़ा होगा।'

द्रविड़ ने कहा ,'ऐसे में जब उन्हें कारण पता होता है तो हम इसके बारे में बात कर सकते हैं। मैं नहीं चाहता कि चयन नहीं होने पर कोई मायूस नहीं हो। हर कोई खेलना चाहता है , कोई बाहर नहीं रहना चाहता। ऐसे में बाहर रहने पर आपकी प्रतिक्रिया की आपको परिभाषित करती है । मुझे अभी तक कोई शिकायत नहीं है।' उन्होंने कहा कि प्लेइंग इलेवन के बारे में फैसला भावनाओं में बहकर नहीं बल्कि हालात और विरोधी टीम के अनुसार संयोजन को देखकर लिया जाएगा। उन्होंने कहा,'हमारे पास बेहतरीन खिलाड़ी है। हमें फैसला लेना होगा और 11 खिलाड़ी ही खेल सकते हैं। हम भावनाओं में बहकर फैसला नहीं लेंगे। हमने दौरे के लिए सिलेक्टर्स ग्रुप से अच्छी बातचीत की है कि दक्षिण अफ्रीका में टेस्ट सीरीज जीतने के लिये सर्वश्रेष्ठ इलेवन क्या हो सकती है।' यह पूछने कि क्या मौजूदा दक्षिण अफ्रीकी आक्रमण उन्हें कमजोर लगता है, द्रविड़ ने कहा,' मुझे नहीं लगता कि किसी भी नजरिए से यह कमजोर है लेकिन हमारे पास अधिक अनुभवी गेंदबाज हैं। पहले ऐसा नहीं होता होगा। उनके पास हालांकि कगिसो रबाडा और डुआने ओलिवर जैसे बेहतरीन गेंदबाज हैं। हम उन्हें हलके में नहीं लेंगे।

इंग्लैंड के पूर्व कप्तान रे इलिंगवर्थ का 89 साल की उम्र में हुआ निधन, यार्कशर ने ट्वीट कर दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान रे इलिंगवर्थ का 89 वर्ष की उम्र में शनिवार को निधन हो गया। उनका कैंसर का इलाज चल रहा था। ऑफ स्पिन करने वाले ऑलराउंडर इलिंगवर्थ ने साल 1951 में फर्स्ट क्लास करियर शुरू किया। उन्होंने साल 1983 में 51 साल की उम्र में रिटायरमेंट लिया। उन्होंने 32 साल के करियर में 24134 रन बनाए और 2072 विकेट लिए। जिसमें दो सीजन में 1000 रन और 6 बार 100 विकेट शामिल थे। उन्होंने यॉर्कशर को तीन काउंटी चैम्पियनशिप खिताब भी दिलाए। यॉर्कशर काउंटी ने उनके निधन की जानकारी दी जिसके लिये वह खेला करते थे। यॉर्कशर ने ट्वीट किया ,'रे के परिवार और यॉर्कशर परिवार के प्रति हमारी सहानुभूति।' इलिंगवर्थ ने 1958 से 1973 के बीच इंग्लैंड के लिए 61 टेस्ट खेलकर 1836 रन बनाए और 122 विकेट लिए। उन्होंने 31 मैचों में इंग्लैंड की कप्तानी करके 12 जीते। इलिंगवर्थ 1970-71 में ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट सीरीज जीतने वाली इंग्लैंड टीम के कप्तान थे। उन्होंन रिटायरमेंट के बाद विभिन्न रूपों में क्रिकेट के साथ अपना जुड़ाव जारी रखा। रिटायरमेंट के बाद इलिंगवर्थ ने कमेंटेटर, प्रशासक और कोच के तौर पर काम किया। उन्होंने साल के शुरूआत में कैंसर के कारण अपनी पत्नी को खो दिया था। नवंबर 2021 में उन्होंने खुलासा किया था कि एसोफैगल कैंसर का इलाज करवा रहे थे।

भारत के पूर्व ओपनर आकाश चोपड़ा ने की भविष्यवाणी

ड्रॉ होगी भारत-साउथ अफ्रीका टेस्ट सीरीज

नईदिल्ली। टीम इंडिया और साउथ अफ्रीका के बीच तीन मैचों की टेस्ट सीरीज 26 दिसंबर से शुरू हो जाएगी। बॉक्सिंग डे टेस्ट से पहले टीम इंडिया के पूर्व सलामी बल्लेबाज आकाश चोपड़ा ने अपनी राय दी है। उन्होंने साउथ अफ्रीका को सीरीज में अपनी पसंदीदा टीम के तौर पर चुना। उन्होंने ये भी माना कि एनरिक नॉर्टजे की अनुपस्थिति भारत के पक्ष में सीरीज को झुकाती है। चोट की वजह से एनरिक नॉर्टजे टेस्ट सीरीज से बाहर हो गए हैं। पहला टेस्ट सेंचुरियन में खेला जाएगा। इस मैदान पर मेजबान साउथ अफ्रीका का रिकॉर्ड बहुत शानदार है। टीम ने यहां 26 में 21 टेस्ट मैच जीते हैं। साउथ अफ्रीका को सिर्फ 2 बार यहां हार मिली है।

आकाश चोपड़ा ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा,' यह दिलचस्प होने जा रहा है लेकिन मुझे लगता है कि यह एक ड्रॉ सीरीज हो सकती है। 51 फीसदी दक्षिण अफ्रीका, 49 फीसदी भारत। इस समय मैं यही सोच रहा हूं। अगर कोई टीम जीतती

है, तो मुझे लगता है कि वह दक्षिण अफ्रीका होगी। मैं अभी भारत को इसे जीतते हुए नहीं देखता, मेरा मतलब है कि यह मुश्किल है। अगर नॉर्टजे खेल रहे होते तो मैं दक्षिण अफ्रीका के लिए 2-1 कह देता। नॉर्टजे नहीं हैं, मैं कह रहा हूं कि यह सीरीज फिर से 1-1 पर खत्म हो सकती है। टेस्ट मैचों के ड्रॉ होने संभावना है, पहला टेस्ट बारिश के कारण थोड़ी परेशानी में पड़ सकता है।'

उन्होंने कहा कि दक्षिण अफ्रीका के लिए हाल का समय अच्छा नहीं रहा है लेकिन अब चीजें सही हो रही हैं। ऐसा नहीं है कि दक्षिण अफ्रीका की टीम ऊंची उड़ान भर रही है। मुझे लगता है कि वास्तव में टीम फिर से एक हो रही है। टी-20 वर्ल्ड कप में उन्होंने दिखाया कि उनके पास खिलाड़ी हैं। टीम ट्रांजिशन से गुजर रही हैं। भारत ने साउथ अफ्रीका में साल 2018 में टेस्ट सीरीज खेली थी। इस सीरीज में भारत को 2-1 से मात मिली थी। एनरिक नॉर्टजे और क्विंटन डिकॉक के नहीं होने से इस बार भारतीय टीम को फायदा मिल सकता है। भारत ने साउथ अफ्रीका में आज तक कोई टेस्ट सीरीज नहीं जीती है। सात बार भारत दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ उसके घर में 7 टेस्ट सीरीज खेल चुकी हैं। इसमें से 6 में भारत को हार और एक सीरीज ड्रॉ हुई है। भारत ने साउथ अफ्रीका में अभी तक सिर्फ तीन टेस्ट मैच जीते हैं।

भारत के पूर्व तेज गेंदबाज जहीर खान को भरोसा, रोहित शर्मा के बगैर भी टीम इंडिया टेस्ट सीरीज जीतकर रचेगी इतिहास

नई दिल्ली। टीम इंडिया ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ तीन मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए कमर कस ली है। सीरीज का पहला मुकाबला 26 दिसंबर को सेंचुरियन के सुपरस्पोर्ट पार्क में खेला जाएगा। साउथ अफ्रीका एकमात्र देश है जहां भारत ने टेस्ट सीरीज नहीं जीती है। विराट कोहली के पास टेस्ट सीरीज जीतकर इतिहास रचने का गोल्डन चांस हैं। रोहित शर्मा और शुभमन गिल के चोटिल होने की वजह से केएल राहुल और मयंक अग्रवाल पारी की शुरूआत करने के लिए तैयार हैं। भारत के पूर्व तेज गेंदबाज जहीर खान का मानना है कि दक्षिण अफ्रीका में टीम इंडिया को रोहित शर्मा की कमी खलेगी। हालांकि उन्होंने ये भी माना है कि भारत के पास उस स्थान को भरने के लिए कई मजबूत खिलाड़ी हैं। एक बातचीत में जहीर ने कहा,' रोहित शर्मा की क्वालिटी आप हमेशा मिस करने वाले हैं, इसमें कोई भी शक नहीं है। लेकिन अगर आप टीम को देखें तो भारत के पास ओपनिंग के लिए कई अच्छे विकल्प हैं। आपको इंतजार करना होगा और देखना पड़ेगा कि टीम किस दिशा में जाती है। टीम में लगातार अच्छा प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ी हैं और बेंच स्ट्रेंथ भी काफी अच्छी दिखाई दे रही है। टीम मैनेजमेंट के लिए यह बढ़िया सिरदर्द है।' वहीं जहीर खान ने दक्षिण अफ्रीका में भारत की पहली टेस्ट सीरीज जीतने का सपोर्ट किया है।

जहीर ने आगे कहा,' टीम के लगातार प्लानिंग एवं निरंतरता से क्रिकेट खेलने के चलते यह संभव हुआ है। उन्हें बस चीजों को सरल रखना है। वे जो कर रहे हैं उसे जारी रखने की जरूरत है। वे विभिन्न परिस्थितियों में सफल रहे हैं और सबसे अच्छी बात यह है कि गेंदबाजी यूनिट लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रही है। भारत निश्चित रूप से साउथ अफ्रीका की परिस्थितियों को पसंद करेगा और गेंदबाजों को इन परिस्थितियों में गेंदबाजी करने में मजा आएगा। उन्होंने आगे कहा कि एक बल्लेबाजी यूनिट के रूप में आपको बोर्ड पर बहुत अधिक रन बनाने की जरूरत है जो एक बुनियादी आवश्यकता है। लेकिन एक टेस्ट मैच जीतने के लिए आपको 20 विकेट लेने होंगे।

सदर बाजार की पुलिया में कूड़ा फसने से माइनर का पानी रुका

एक दर्जन गांव में फसल डूबने का खतरा बढ़ा

किशनी। नगर के मध्य से निकले किशनी माइनर की सदर बाजार की पुलिया में कूड़ा अटकने से माइनर का पानी अवरुद्ध हो गया। इसके चलते ओवरफ्लो होकर पानी पटरी से नीचे उतरने लगा। एक दर्जन गांव के किसानो की रबी की फसल डूबने का खतरा देखते ही नगर पंचायत की जेसीबी ने पुलिया में फंसा कूड़ा निकालने का प्रयास किया लेकिन कामयाब नहीं हो सकी।

शुक्रवार को माइनर के पानी में बहकर आये कूड़े ने सदर बाजार की पुलिया को पूरी तरह अवरुद्ध कर दिया। इसके चलते पानी का बहाव पूरी तरह थम गया और ओवरफ्लो होकर पानी चंद्रपुर , वटपरु के निकट पटरी से नीचे उतरने लगा। इसके चलते नगला मंगद मकरंदपुर, हरचंदपुर,कृपालपुर, उदयपुर,सदर बाजार के किसानों की फसलों के डूबने का खतरा बढ़ गया। खबर मिलते ही नगर पंचायत की जेसीबी मशीन ने कूड़ा निकालने का प्रयास किया लेकिन सफल नहीं हो सके। देर शाम तक सिंचाई विभाग के अधिकारी मौके पर पहुंच गए और उन्होंने भी पुलिया के खुलवाने का प्रयास तेज कर दिया था। वही हर साल आने वाली इस मुसीबत से छुटकारा पाने के लिए किसानों ने पुलिया के चौड़ीकरण की मांग की है।

पहले रोड फिर वोट,ग्राम नगला कले के ग्रामिणो ने सड़क न बनने पर किया प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

किशनी। विधानसभा चुनाव का भले ही अभी डंका न बजा हो पर ग्रामीणो ने चुनाव लड़ने बालों के सामने मुशीबत खड़ी कर दी है तहसील क्षेत्र की ग्राम सभा कुरसंडा के ग्राम नगला कले में सड़क न बनने से ग्रामीणों ने काला बैनर लेकर प्रदर्शन किया और नारेबाजी करते हुए कहा कि पहले रोड फिर वोट तब ही वो मतदान का प्रयोग करेंगे,नगर से 10 किलोमीटर ग्राम सभा कुरसंडा का ग्राम नगला कले है यहां के ग्रामीण अजय सिंह, छोटे सिंह, धर्मेंद्र सिंह, बॉबी चौहान, गौरव चौहान, श्री कृष्ण, श्यामू, आदेश शर्मा, राजेश शर्मा, संजू कश्यप, सोनू कश्यप, लोकेश, धीरू,शिवनंदन ,अजीत सिंह, आनंद कश्यप,आदि ने बताया कि उनके गांव का मुख्य मार्ग आजादी से लेकर अब तक जर्जर पड़ा है कई बार सड़क के लिए सभी जनप्रतिनिधियो व अधिकारियों से गुहार लगाई पर किसी ने कोई सुनवाई नही की,मार्ग पर पड़ी गिट्टी से ग्रामीणों को भारी मुसीवत का सामना करना पड़ रहा है,बरसात में हालात और भी खराब हो जाते है।

बर्षो पहले एक बार मार्ग को डामरीकरण करा दिया गया था पर घटिया सामग्री लगाकर बनी रोड कुछ दिन बाद ही जर्जर हो गयी जिससे हालात आज और भी खराब है,शुक्रवार को ग्रामीणों ने एकत्रित होकर काला बैनर लेकर नारेबाजी की और साफ साफ कह दिया इस बार बिधानसभा चुनाव से पूर्व अगर मार्ग पर निर्माण न कराया गया तो सभी ग्रामीण मतदान का प्रयोग नही करेंगे,वही मार्ग के संबध में किशनी विधायक ब्रजेश कठेरिया ने बताया कि मार्ग का प्रस्ताव बो भेज चुके है पर सरकार ने बदले की भावना से रुपया ही स्वीकृत नही किया,सपा सरकार बनते ही किशनी क्षेत्र की सभी जर्जर सडको की कायाकल्प की जाएगी।

सिपाही ने कमरे में बंद की छात्रा, परिजनों के हंगामे के बाद एसपी ने किया लाइन हाजिर

अखंड भारत संदेश

मैनपुरी। आक्रोशित परिजन थाने पहुंचे थे और सिपाही के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की थी, जिसके बाद एसपी ने सीओ को जांच सौंपकर सिपाही लाइन हाजिर कर दिया मैनपुरी शहर के आश्रम रोड के पास किराए के मकान में रह रहे एक सिपाही ने कोचिंग जा रही एक छात्रा को कमरे में बुला लिया। इसके बाद दरवाजा बंद कर लिया। परिजनों के आने पर छात्रा को पीछे के रास्ते से बाहर निकाला। बृहस्पतिवार को छात्रा के घरवालों ने कोतवाली पहुंच कर कार्रवाई की मांग करते हुए हंगामा किया। इसके बाद सिपाही को लाइन हाजिर कर दिया गया। मामले की जांच सीओ सिटी को सौंपी गई है।

किराए पर रहा था सिपाही

कोतवाली क्षेत्र की कैलाश गेट चौकी पर तैनात सिपाही विजय कुमार आश्रम रोड के पास एक मकान में किराए पर कमरा लेकर रहा है। गुरुवार की सुबह एक कालोनी निवासी 20 वर्षीय एक छात्रा कोचिंग जा रही थी। तभी उक्त सिपाही ने उसे अपने कमरे में बुलाकर दरवाजा बंद कर लिया।

छोटी बहन ने फोन कर परिजनों को जानकारी दी

छात्रा के साथ जा रही छोटी बहन ने जब सिपाही से बहन को छोड़ने के लिए कहा तो उसने मना कर दिया। इसके बाद छोटी बहन ने फोन कर परिजनों को जानकारी दी। परिजनों ने जब वहां आकर हंगामा किया तो सिपाही ने छात्रा को घर के पीछे सीढ़ी लगाकर बाहर निकाल लिया। उक्त घटना के बाद गुरुवार देर रात कोतवाली पहुंचे छात्रा के परिजनों ने सिपाही के खिलाफ तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की। परिजनों के हंगामे के बाद मामला जब एसपी के संज्ञान में आया तो तत्काल से सिपाही को लाइन हाजिर कर दिया गया। मामले की जांच सीओ सिटी को सौंपी गई है। शिकायत पर सिपाही को लाइन हाजिर कर दिया गया है। मामले की जांच की जा रही है, दोषी पाए जाने पर आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। - अमर बहादुर, सीओ सिटी।

गुरु पर्व समारोह में पीएम मोदी ने कहा

सिख गुरुओं की महान तपस्या के कारण भारत की अखंडता आज तक सुरक्षित

नई दिल्ली। पीएम नरेंद्र मोदी गुजरात के कच्छ के गुरुद्वारा लखपत साहिब में गुरु नानक देव जी के गुरुपर्व समारोह को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए संबोधित किया है। बता दें कि हर साल 23 दिसंबर से 25 दिसंबर तक गुजरात की सिख संगत गुरुद्वारा लखपत साहिब में गुरु नानक देव जी का गुरु पर्व मानती है। इस पवित्र मौके पर पीएम मोदी ने कहा कि गुरुद्वारा लखपत साहिब समय की हर गति का साक्षी रहा है।

आज जब मैं इस पवित्र स्थान से जुड़ रहा हूं, तो मुझे याद आ रहा है कि अतीत में लखपत साहिब ने कैसे कैसे झंझावातों को देखा है। एक समय ये स्थान दूसरे देशों में जाने के लिए, व्यापार के लिए एक प्रमुख केंद्र होता था। 2001 के भूकम्प के बाद मुझे गुरु कृपा से इस पवित्र स्थान की सेवा करने का सौभाग्य मिला था। मुझे याद है, तब देश के अलग-अलग हिस्सों से आए शिल्पियों ने इस स्थान के मौलिक गौरव को संरक्षित किया।

मोदी ने कहा कि गुरु नानकदेव जी का संदेश पूरी दुनिया तक नई ऊर्जा के साथ पहुंचे, इसके लिए हर स्तर पर प्रयास किए गए। दशकों से जिस करतारपुर साहिब कॉरिडोर की प्रतीक्षा थी, 2019 में हमारी सरकार ने ही उसके निर्माण का काम पूरा किया। अभी हाल ही में हम अफगानिस्तान से स-सम्मान गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूपों को भारत लाने में सफल रहे हैं। गुरु कृपा का इससे बड़ा अनुभव किसी के लिए और क्या हो सकता है उन्होंने कहा कि कुछ महीने पहले जब मैं अमेरिका गया था, तो वहां अमेरिका ने भारत को 150 से ज्यादा ऐतिहासिक वस्तुएं लौटाईं। इसमें से एक पेशकब्ज या छोटी तलवार भी है, जिस पर फारसी में गुरु हरगोबिंद जी का नाम लिखा है। यानि ये वापस लाने का सौभाग्य भी हमारी ही सरकार को मिला। पीएम मोदी ने कहा कि गुरु नानक देव जी और उनके बाद हमारे अलग-अलग गुरुओं ने भारत की चेतना को तो प्रज्वलित रखा ही, भारत को भी सुरक्षित रखने का मार्ग बनाया। हमारे गुरुओं का योगदान केवल समाज और आध्यात्म तक ही सीमित नहीं है। बल्कि हमारा राष्ट्र, राष्ट्र का चिंतन, राष्ट्र की आस्था और अखंडता अगर आज सुरक्षित है, तो उसके भी मूल में सिख गुरुओं की महान तपस्या है। जिस तरह गुरु तेगबहादुर जी मानवता के प्रति अपने विचारों के लिए सदैव अडिग रहे, वो हमें भारत की आत्मा के दर्शन कराता है। जिस तरह देश ने उन्हें ह्यहिन्द की चादरह्ण की पदवी दी, वो हमें सिख परंपरा के प्रति हर एक भारतवासी के जुड़ाव को दिखाता है। उन्होंने आगे कहा कि औरंगजेब के खिलाफ गुरु तेग बहादुर का पराक्रम और उनका बलिदान हमें सिखाता है कि आतंक और मजहबी कट्टरता से देश कैसे लड़ता है। इसी तरह, दशम गुरु, गुरुगोबिन्द सिंह साहिब का जीवन भी पग-पग पर तप और बलिदान का एक जीता जागता उदाहरण है। अंग्रेजों के शासन में भी हमारे सिख भाइयों बहनों ने जिस वीरता के साथ देश की आजादी के लिए संघर्ष किया, हमारा आजादी का संग्राम, जलियांवाला बाग की वो धरती, आज भी उन बलिदानों की साक्षी है।

हम मुकाबला ही नहीं करते दूसरे देश में घुसकर मारते हैं : मनोज सिन्हा

गाजीपुर। जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने शनिवार को महामना पं मदनमोहन मालवीय और पूर्व पीएम अटल बिहारी बाजपेयी की जयंती पर आयोजित कार्यक्रमों में भागीदारी की। एलजी ने कहा कि दोनों युगांतकारी पुरुष थे, दोनों ने एक नहीं अनेकों ऐसे काम किए जिन्होंने इन्हें महापुरुष बनाया। महामना पं. मदन मोहन मालवीय काशी हिन्दू विश्व विद्यालय के प्रणेता तो थे ही, इस युग के आदर्श पुरुष भी हैं। वह भारत के पहले और आखिरी व्यक्ति हैं जिन्हें महामना की सम्माजनक उपाधि से विभूषित किया गया।

शनिवार को पं मदन मोहन मालवीय इंटर कालेज सिखड़ी के वार्षिकोत्सव में एलजी ने कहा कि सबका साथ, सबका विकास, सबका सम्मान और सबका विश्वास आज पूरे देश मे गूंज रहा है। पहले से देश के ड्राइविंग सीट पर कोई सक्षम पुरुष होता तो हम कहीं और होते, आजादी के बाद जैसा देश होना चाहिए था वह नहीं हुआ। विगत आठ वर्षों से जिस तरह से देश के भौतिक संसाधनों के समृद्धि हुई, दो-चार वर्षों में देश की सीमाएं सुरक्षित होने के साथ किसी भी देश से मजबूत संसाधन भी हमारे पास होंगे। हम सिर्फ मुकाबला ही नहीं करते बल्कि दूसरे देश मे घुसकर मार भी करते हैं। विश्व में जो आज बदलाव हो रहा है, उसमें दुनिया मान रही है की भारत का बदलाव तेज गति से हो रहा है।

तीसरी लहर की हो चुकी है शुरूआत दिल्ली-मुंबई में कोरोना केसों में बड़ा उछाल

नई दिल्ली, मुंबई। कोरोना के नए वेरिएंट ओमिक्रॉन की वजह से देश में कोरोना की तीसरी लहर का आना लगभग तय हो गया है। विशेषज्ञों की ओर से दी गई चेतावनी के मुताबिक ही कोरोना केस तेजी से बढ़ने लगे हैं। पहली और दूसरी लहर में संक्रमण का गढ़ रहे मुंबई और दिल्ली में एक बार फिर कोरोना तेजी से पैर पसार रहा है। आज फिर इन दोनों महानगरों में कोरोना केसों में काफी तेजी दिखी है, जिससे यह सवाल उठने लगा है कि क्या तीसरी लहर की शुरूआत हो चुकी है

दिल्ली में 24 घंटे में कोरोना संक्रमण के 249 नए केस दर्ज किए गए हैं, जोकि 13 जून के बाद सर्वाधिक है। पॉजिटिविटी रेट भी बढ़कर 0.43 फीसदी हो गई है। राजधानी दिल्ली में पिछले कई दिनों से लगातार कोरोना केस बढ़ रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक, 24 घंटे में 249 लोग संक्रमित पाए गए हैं तो 1 मरीज की मौत हो गई है। इस दौरान 96 मरीज स्वस्थ हुए तो एक्टिव केसों की संख्या बढ़कर 934 हो गई है। यहां अब तक कुल 14,43,062 लोग संक्रमित हो चुके हैं तो 25,104 की मौत हो चुकी है। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में भी कोरोना की रफ्तार तेज होती जा रही है। 24 घंटे में यहां 757 संक्रमित मिले हैं। हालांकि, राहत की बात यह है कि आज किसी मरीज की मौत नहीं हुई है। 24 घंटे में 280 मरीज स्वस्थ हुए हैं। यहां एक्टिव केसों की संख्या बढ़कर 3,703 हो गई है। देश में ओमिक्रॉन के केस तेजी से बढ़ रहे हैं। सबसे पहले दक्षिण अफ्रीमा में मिले वेरिएंट से 415 लोग संक्रमित मिल चुके हैं।

कर्नाटक में भी लगेगा नाइट कर्फ्यू सीएम बोम्मई बोले- आज को बैठक के बाद लेंगे फैसला

नई दिल्ली। देश में कोरोना वायरस के मामलों में बढ़ोतरी के बाद कई राज्यों में पाबंदियां कड़ी कर दी गई है। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश समेत कई राज्यों में नाइट कर्फ्यू लगाए जाने के बाद कर्नाटक में भी जल्द पाबंदियां कड़ी की जाएगी।

राज्य में कोरोना पाबंदियों को लेकर मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई रविवार को अधिकारियों और विशेषज्ञों के साथ बैठक करेंगे। इस बैठक में नाइट कर्फ्यू लगाने को लेकर फैसला किया जाएगा। बोम्मई ने कहा, देश में ओमिक्रॉन के मामले बढ़ रहे हैं। महाराष्ट्र, केरल के साथ-साथ तमिलनाडु में भी कोविड-19 के मामले बढ़ रहे हैं। इससे मैं चिंतित हूं। बेंगलुरु पहुंचने के बाद, मैं सभी महत्वपूर्ण लोगों के साथ चर्चा करूंगा और वर्तमान स्थिति को ध्यान में रखते हुए अगले कदम पर फैसला करूंगा। नाइट कर्फ्यू लगाए जाने के संबंध में मुख्यमंत्री ने कहा कि बैठक में इस पर निर्णय लिया जाएगा। बूस्टर खुराक देने की संभावना के बारे में पूछे जाने पर बोम्मई ने कहा कि केंद्र इस पर फैसला करेगा। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि राज्य में पूर्व में जारी दिशा-निर्देश अब भी लागू हैं। हालांकि, स्थिति की समीक्षा के बाद और सख्त कदम उठाए जा सकते हैं। कर्नाटक में ओमिक्रॉन वैरिएंट के अब तक 31 मामले आए हैं और ज्यादातर संक्रमितों में किसी तरह के लक्षण नहीं थे। इन संक्रमितों में बच्चों-किशारों को छोड़कर सभी का टीकाकरण किया जा चुका है। वहीं, अगर पूरे देश की बात करे तो अब तक 415 केस सामने आ चुके हैं। कर्नाटक के मुख्यमंत्री ने मंगलवार को क्रिसमस को ध्यान में रखते हुए राज्य में 30 दिसंबर 2021 तक और फिर 2 जवनरी 2022 तक नए साल के अवसर पर होने वाले सार्वजनिक समारोहों पर रोक लगा दिया है।

ओमिक्रॉनः असम सरकार ने नाइट कर्फ्यू का किया ऐलान, कई और पाबंदियां भी लगाईं

गुवाहाटी। देश में कोरोना वायरस के नए वेरिएंट ओमिक्रॉन के प्रसार के बीच असम सरकार ने भी राज्य में नाइट कर्फ्यू सहित कई पाबंदियों का ऐलान किया है। कोरोना के बढ़ते केसों पर लगाम के लिए सरकार ने एहतियात के तौर पर ये कदम उठाए हैं।

सरकार की ओर से शनिवार को जारी गाइडलाइंस के मुताबिक, पूरे राज्य में 26 दिसंबर से रात 11:30 बजे से सुबह 6 बजे तक कर्फ्यू रहेगा। हालांकि, 31 दिसंबर को नाइट कर्फ्यू से राहत दी गई है। राज्य सरकार की ओर से जारी गाइडलाइंस में कहा गया है कि डिस्ट्रिक्ट डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी की ओर से जिले में हालात को देखते हुए खुले स्थानों पर लोगों के एकत्रित होने की सीमा तय की जाएगी। बंद जगहों पर क्षमता के 50 फीसदी लोग एकत्रित हो सकते हैं। सरकार ने कहा है कि अहम धार्मिक स्थलों पर प्रति घंटे 60 व्यक्ति को प्रवेश दिया जाएगा, जो टीके की दोनों डोज ले चुके हैं। दूसरे धार्मिक स्थलों पर प्रति घंटे 40 लोगों को प्रवेश दिया जाएगा।

नए आदेश के मुताबिक, सभी कार्यस्थल, व्यापारिक प्रतिष्ठान, खाने-पीने की दुकानें, राशन की दुकानें, डेयरी रात 10:30 बजे के बाद नहीं खुलेंगी। सिनेमाघर 50 फीसदी दर्शकों के साथ चलेंगे। सिनेमाघरों में भी केवल उन्हीं दर्शकों को जाने की इजाजत होगी, जिन्होंने कोरोना की दोनों खुराक ले ली है। राहत की बात यह है कि असम में ओमिक्रॉन का कोई केस नहीं आया है।

विज्ञापनों के लेकर केजरीवाल पर बरसे अमित शाह, कहा- दिल्ली वालों को पता है कौन विकास कर रहा है

नईदिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दिल्ली सरकार की ओर से दिए गए मीडिया विज्ञापनों पर कटाक्ष करते हुए मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर निशाना साधा है। अमित शाह ने शनिवार को कहा कि राजधानी के लोगों को एहसास हो गया है कि वास्तव में विकास का काम कौन करता है और कौन केवल बातें करता है। दक्षिण दिल्ली नगर निगम (एसडीएमसी) की ओर से कबाड़ की चीजों से विकसित भारत दर्शन पार्क का उद्घाटन करते हुए शाह ने यह भी कहा कि भाजपा शासित दिल्ली के तीन नगर निगमों के कारण ही मोदी सरकार राजधानी में कल्याणकारी कार्य कर पाई है। गृह मंत्री ने कहा कि देश में दो तरह की वर्क कल्चर है। उन्होंने आगे कहा एक वो जो लोगों को मुफ्त टीके उपलब्ध कराने, प्रशासनिक सुधार लाने, नई शिक्षा नीति लाने, शहरी विकास कार्यक्रम शुरू करने, 60 करोड़ गरीब लोगों को मुफ्त आवास, बिजली, गैस आदि कल्याणकारी कार्यक्रमों जैसे तमाम विकास कार्यों

को चुपचाप अंजाम देते हैं। और दूसरा है करो या ना करो, विज्ञापन दो, टीवी इंटरव्यू दो। दिल्ली के लोगों ने महसूस किया है कि वास्तव में विकास का काम कौन कर रहा है कौन केवल बाते कर रहा है। विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रमों के लिए दिल्ली के नगर निकायों की प्रशंसा करते हुए शाह ने कहा कि अगर दिल्ली में केजरीवाल के नेतृत्व वाली आप सरकार ने तीनों नगर निगमों को उके 13000 करोड़ रुपए के बकाए का भुगतान किया होता तो नगर निकायों ने और काम किया होता। गृह मंत्री ने आगे कहा मैं केजरीवाल से कहना चाहता हूं कि अगर 13000 करोड़ रुपए का बकाया नगर निगमों को दिया जाता है तो वो लोगों के लाभ के लिए और भी काम कर सकते हैं। इसके अलावा केंद्रीय गृह मंत्री ने अयोध्या में राम मंदिर बनाने के लेकर भी विपक्षियों पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि बहुत से लोग बीजेपी का मजाक उड़ाते थे कि पार्टी अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण कराना चाहती है, लेकिन यह नहीं बताएगी कि यह कब होगा। उन्होंने कहा, लेकिन अब सभी ने देखा है कि नरेंद्र मोदी की पहल पर अयोध्या में भव्य राम मंदिर बन रहा है।

जनसंख्या नियंत्रण और समान नागरिक संहिता कानून जरूरी : साक्षी महाराज

औरैया। दिबियापुर क्षेत्र के नगला जय सिंह में शनिवार को आयोजित कार्यकर्ता सम्मान समारोह में पहुंचे उन्नाव के भाजपा सांसद साक्षी महाराज ने कहा कि भारत में जनसंख्या नियंत्रण कानून और समान नागरिक संहिता की सख्त जरूरत है। साक्षी महाराज ने असुदद्दीन ओवैसी को जमकर खरी खोटी सुनाई। उन्होंने कहा कि औवैसी कहते थे कि राममंदिर के निर्माण पर खून की नदियां बह जाएंगी। तंज कसते हुए कहा कि मंदिर निर्माण हो रहा है लेकिन खून का एक कतरा भी नहीं गिरा। जनसंख्या नियंत्रण पर साक्षी ने कहा कि चार बीबी चालीस बच्चे अब भारत में नहीं चलेगा।

आयकर छापाः सीएम योगी का विपक्ष पर निशाना, बोले- जो सत्ता से दूर हैं उनके घरों से मिल रहे दो-दो सौ करोड़

आगरा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को विपक्ष पर जमकर निशाना साधा। कहा, उत्तर प्रदेश में पूर्व की सरकारों ने संस्कृत का पैसा कब्रिस्तानों को दे दिया। गरीबों को आवास देने के स्थान पर अपने घर भर लिए गए। जो सत्ता से दूर हैं उनके घरों से दो-दो सौ करोड़ रुपए मिल रहे हैं। यह रकम कहां से आई उन्होंने कहा कि पांच साल सत्ता में रहते हुए यह धनराशि एकत्रित की गई। सीएम योगी भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के 98वें जन्म दिवस के मौके पर बटेश्वर में जनसभा को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि कुछ लोग पांच वर्षों से सत्ता से बाहर हैं, फिर भी आयकर छापों में घरों से दो-दो सौ करोड़ रुपये मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि रुपये खेत और खलिहानों में नहीं उगते हैं। अगर खेतों में रुपये उगते तो हमारे सांसद राजकुमार चाहर के पास सबसे ज्यादा पैसा होता क्योंकि वह भाजपा किसान मोर्चा के अध्यक्ष हैं। उन्होंने कहा कि इतना पैसा मिलने का मतलब, जब वो लोग सत्ता में थे तब उन्होंने खूब लूट-खसोट की। यह पैसा पांच साल की सरकार के दौरान जनता से लूटा हुआ धन है।

ब्रह्माण्ड के कई रहस्य सुलझाएगा दुनिया का सबसे बड़ा स्पेस टेलीस्कोप, एनएएसए ने किया लॉन्च

कौरू(एजेंसी)। विश्व के सबसे बड़े और अब तक का सबसे ज्यादा ताकतवर स्पेस टेलीस्कोप शनिवार को अपने अभियान पर रवाना हो गया। दुनिया के सबसे बड़ा यह टेलीस्कोप ब्रह्माण्ड के कई अनसुलझे रहस्यों को सुलझाने में वैज्ञानिकों की मदद कर सकता है। यह पहले तारों, आकाशगंगाओं की खोज और जीवन के संकेतों का पता लगाने में भी अहम भूमिका निभाएगा। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा (ठअरअ) की 'जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप' को दक्षिण अमेरिका के उत्तर-पूर्वी तट स्थित फ्रेंच गुयाना अंतरिक्ष केंद्र से क्रिसमस की सुबह यूरोपीय रॉकेट 'एरियन' के जरिए अंतरिक्ष के लिए रवाना किया गया। यह टेलीस्कोप अपने कक्षा तक पहुंचने में 16 लाख किलोमीटर की दूरी तय करेगा जो कि चंद्रमा से चार गुना अधिक दूर है। इसे वहां पहुंचने में एक महीने

का समय लगेगा और फिर अगले पांच महीनों में यह ब्रह्मांड की पड़ताल शुरू करने के लिए तैयार हो जाएगा। नासा के एडमिनिस्ट्रेटर बिल नेल्सन ने इस हफ्ते की शुरूआत में कहा था कि यह हमें हमारे ब्रह्मांड और उसमें हमारे स्थान की बेहतर समझ देने जा रही है कि हम कौन और क्या हैं। हालांकि, उन्होंने आगाह करते हुए यह भी कहा था, 'जब आप एक बड़ा पुरस्कार चाहते हैं, तो आपके सामने आमतौर पर एक बड़ा जोखिम होता है।' एरियनस्पेस के मुख्य कार्याधिकारी स्टीफन इजराइल ने प्रक्षेपण से कुछ मिनट पहले कहा, हम आज सुबह मानवता के लिए प्रक्षेपण कर रहे हैं। नासा ने यूरोपीय और कनाडाई अंतरिक्ष एजेंसियों के साथ मिलकर 7 टन का नया टेलीस्कोप बनाने और लॉन्च करने के लिए पार्टनशिप की थी।

बच्चों में संक्रमण का खतरा ज्यादा, अभी और घातक हो सकता है ओमिक्रॉन, वेरिएंट की पहचान करने वाली डॉक्टर का दावा

कोलकाता। दक्षिणी अफ्रीका में ओमिक्रॉन का सबसे पहले पता लगाने वाली डॉ. एंजेलिक कोएत्जी ने कहा है कि भारत में कोरोना वायरस के इस नए स्वरूप के कारण संक्रमण के मामलों में बढ़ोतरी दिखेगी, लेकिन अधिकतर लोगों में मामूली लक्षण दिखने की उम्मीद है, जैसा कि दक्षिण अफ्रीका में देखा जा रहा है। साउथ अफ्रीकन मेडिकल एसोसिएशन की अध्यक्ष ने यह भी कहा कि मौजूदा टीकों से इस रोग को फैलने से रोकने में निश्चित ही मदद मिलेगी, लेकिन टीकाकरण नहीं कराने वाले लोगों को शत-प्रतिशत खतरा है। उन्होंने कहा ओमिक्रॉन से बच्चों को खतरा है। ओमिक्रॉन अभी अपने खतरनाक स्वरूप में नहीं है लेकिन इसके आगे और खतरनाक होने की उम्मीद है।

साउथ अफ्रीकन मेडिकल एसोसिएशन की अध्यक्ष एंजेलिक कोएत्जी ने प्रिटोरिया से फोन पर पीटीआई भाषा को दिए एक साक्षात्कार में कहा, "मौजूदा टीकों से ओमिक्रॉन स्वरूप को फैलने से

रोकने में काफी मदद मिलेगी।" उन्होंने कहा कि यदि किसी व्यक्ति का टीकाकरण हो चुका है या जो व्यक्ति पहले भी कोरोना वायरस से संक्रमित हो चुका है, तो उनसे यह संक्रमण कम लोगों को फैलेगा और टीकाकरण नहीं कराने वाले लोग काफी मदद मिलेगी, क्योंकि हम जानते हैं कि यदि ापका टीकाकरण हो चुका है या आप पहले भी संक्रमित हो चुके हैं, तो आप केवल एक तिहाई संक्रमण फैलाएंगे, जबकि टीकाकरण नहीं कराने वाले लोग वायरस को संभवतः शत-प्रतिशत फैलाएंगे। कोएत्जी ने कहा, "मौजूदा टीकों से संक्रमण को कम करने में संभवतः शत प्रतिशत संक्रमण फैलाएंगे।" उन्होंने कहा कि कोविड-19 वैश्विक महामारी अभी समाप्त नहीं हुई है और आगामी दिनों में यह 'एंडेमिक' (स्थानीय स्तर पर फैलने वाला संक्रमण) बन जाएगी। उन्होंने कुछ विशेषज्ञों की इस राय से असहमति जताई कि अपेक्षाकृत कमजोर स्वरूप ओमिक्रॉन के आने के साथ ही कोविड-19 समाप्त होने वाला है। कोएत्जी ने कहा, "मुझे ऐसा नहीं लगता। मेरा मानना है कि यह (महामारी का शीघ्र समाप्त होना) मुश्किल होगा। मुझे लगता है कि यह अब स्थानीय स्तर पर फैलने वाला संक्रमण बनेगा। कोएत्जी ने कहा, "भारत में ओमिक्रोन के कारण कोविड-19 के मामलों में बढ़ोतरी होगी और बड़ी संख्या में लोग संक्रमित पाए जाएंगे, लेकिन अधिकतर मामलों में लक्षण मामूली रहने की उम्मीद है, जैसा कि हम दक्षिण अफ्रीका में देख रहे हैं।

अखंड भारत संदेश के लिए (स्वामी श्री योगी सत्यम योग सत्संग समिति) क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूसी प्रयागराज उत्तर प्रदेश 211019 से प्रकाशित एवं विपिन इंटरप्राइजेज 1/6C माधवकुंज, कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम योग सत्संग समिति पी.आर.बी .एक्ट के अंतर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदाई। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

UPHIN **29506**